Class: B.A. 3 year	**Course Code:** MUSA306PR
Subject: Music (Vocal/Instrumental)	**Course Name:** ELECTIVE(DSE-1A) UNIT-2 VOCAL/INSTRUMENTAL (HINDUSTANI MUSIC)

MUSIC
(Hindustani Music)

Lesson : 1 - 15

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	भीमपलासी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	देस राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	14
6	इकाई - 3	पूरिया धनाश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	27
7	इकाई - 4	भीमपलासी राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	40
8	इकाई - 5	देस राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	54
9	इकाई - 6	पूरिया धनाश्री राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	67
10	इकाई - 7	भीमपलासी राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	81
11	इकाई - 8	देस राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	95
12	इकाई - 9	पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	109
13	इकाई - 10	भीमपलासी राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	125
14	इकाई - 11	देस राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	139
15	इकाई - 12	पूरिया धनाश्री राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	153
16	इकाई - 13	ध्रुवपद	169
17	इकाई - 14	एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत	179
18	इकाई - 15	ताल • तिलवाड़ा ताल • झप ताल • धमार ताल • रूपक ताल • कहरवा ताल	190
19		महत्वपूर्ण प्रश्न	207

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA306PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन तथा मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक तथा मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में वादन के संदर्भ में भीमपलासी राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में वादन के संदर्भ में देस राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन के संदर्भ में पूरिया धनाश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में गायन के संदर्भ में भीमपलासी राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में देस राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में पूरिया धनाश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन के संदर्भ में भीमपलासी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन के संदर्भ में देस राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में पूरिया धनाश्री राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में गायन के संदर्भ में भीमपलासी राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में गायन के संदर्भ में देस राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में पूरिया धनाश्री राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में गायन के संदर्भ में ध्रुवपद गायन शैली का वर्णन किया गया है।
इकाई 14 में वादन के संदर्भ में एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों सहित दी गई है।
इकाई 15 में ताल पक्ष से तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।
प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA306PR
B.A. 3rd YEAR, DISCIPLINE SPECIFIC
ELECTIVE (DSE-1B) UNIT-2
VOCAL/INSTRUMENTAL (HINDUSTANI MUSIC)

Title: Practical **Max Marks: (35+15)=50** **Credits: 3**

Rãga – Bhimpalasi, Des, Puriya Dhanashri

1. One Vilambit Khyal/ Maseetkhani Gat in any of the Rãgas.
2. Madhyalaya Khyal/ Razakhani Gat in all the Rãgas.
3. Dhrupad/Dhamar in any one of the Rãgas

   or

   Dhrut Gat in any Tala (other than Teentala)
4. Ability to recite the following Thekas

   Tilwada, Jhaptãla, Dhamar, Roopak, Keherva
5. Singing/playing Devotional songs Shabad/Bhajan with Harmonium.
6. Knowledge of 5 film songs each in Raags, “Bhairavi and Malkauns”
7. Guided listening sessions on the performing aspects of Music.

इकाई-1
राग भीमपलासी की विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	भीमपलासी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	भीमपलासी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
1.5	राग भीमपलासी की विलंबित गत तथा तोड़े
1.5.1	भीमपलासी राग की विलम्बित गत
1.5.2	भीमपलासी राग की विलम्बित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
1.6	सारांश
1.7	शब्दावली
1.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.9	संदर्भ
1.10	अनुशंसित पठन
1.11	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।
-

1.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

1.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

1.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

1.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

1.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

1.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

1.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

1.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

1.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

1.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

1.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

1.5 राग भीमपलासी की विलंबित गत तथा तोड़े

1.5.1 भीमपलासी विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											साम	ग	रेसा	ऩी	सा
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म	म	म	गम	प	नीध	प	म	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											ऩीसा	ऩी	ध़ध़	प़	प़
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म़	म़	प़	ध़प़	म़	प़प़	ऩी	सा	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	ग	मम	प	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	गं	रें	सां	नी	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											मंमं	गं	रेंसां	नी	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नी	ध	प	धप	म	पप	ग	म	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

1.5.2 भीमपलासी राग की विलंबित गत के तोड़े

- गम पनी सांगंरेसा नीध पम गरे सा-
  पनी धप सांगं रेसा नीधपम गमपनी
  धपसांनी धप मग मग रेसा

- पनी धप मप गम पनी सांगं मंगंरेसा
  नीध पम गरे सा-

- नीध पनी धप नीध पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-सा-

- गम मप पनी धप नीसां गंरे सांमं गंरें
  सांनी धप मग रेसा

- नीसां मग मगरेसा ऩीसा गम पम गम
  पनी धप नीसां गंरें

- सांनी धप मग रेसा ऩीसा गग रेसा नीसा
  गम पप मप गम पनी सांसां नीसां गरे
  सांनीधप मग रेसा
  ऩीसागम पग मप गम पनी सांनी रेसा
  गंगं रेंसा मंगं रेसा नीध पम गरे सा-

•	गमपनी	धपमप	मगरेसा	रेसाऩीऽ
	ऽरेसाऩी	ऽऽरेसा	सांनीधप	मगरेसा
	ऩीसामग	रेसाऩीम	गरेसानी	मगरेसा
•	पनी सांगं	रेसा नीसां	पनी धप	मप नीसां
	गंगं रेंसा	नीध पम	पनी धप	साग रेसा
•	पनी धप	मग गम	पनी सां-	गरे सारे
	नीध पध	मप नीसां	गम पनी	सांग रेंसा
	मंगं मंगं	रेंसा गरें	सांनी धप	मप नीसां
•	मप नीध	पनी धप	नीध पम	पनी सांगं
	मंगं रेंसां	पनी सां-		
•	नीसां गग	रेसा नीसां	पनी धप	मप गम
	साग मप	नीसां गरें	सांनीधप	मप नीसां
•	गरें सारें	सांनी धप	गम साग	मप नीसां
	गंगं रेंसां	रेंरें सांनी	धप मप	नीसांनीसां
•	नीसां गं-	रेसा नीसां	रें- सांनी	धपमप
	नी- धप	मप गम	पनी सांगं	रेंसा नीसां

- नीसां गरे   सानी धप   मप गम   मप पनी
  सां- गँरें   सामं गँरे   सांनी धप   मप नीसां
- ऩीऩीऩीरेसा   गममपम   गममपपमम   पऽमगऽरेसाऽ
  ऩीऩीऩीरेसा   ऽप़ऽऩी   साऽऽ   ऽपऽऩी
  साऽऽऽ   ऽप़ऩी   साऽऽऽ
- ऩीऽऩीरेसा   गममपम   मगगरेसा   ऽऩीऽऩी
  साऽऽऽ   मगगरेसा   ऽऩीऽऩी   साऽऽऽ
  मगगरेसा   ऽऩीऽऩी   साऽऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 3

1.11 भीमपलासी राग की विलंबित गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

1.12 भीमपलासी राग की मसीतखानी गत अधिकतर किस मात्रा से शुरू होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 1

घ) 9

1.13 भीमपलासी राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

1.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

1.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

1.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

1.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

1.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: क)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: घ)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: क)

1.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

1.8 उत्तर: क)

1.9 उत्तर: ख)

1.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

1.11 उत्तर: ग)

1.12 उत्तर: ख)

1.13 उत्तर: ख)

1.14 उत्तर: ख)

1.15 उत्तर: ग)

1.9 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

बन्द्योपाध्याय, श्रीपद. (1957). सितार मार्ग (भाग 1-4), भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-2
राग देस की विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	देस राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	देस राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
2.5	राग देस की विलंबित गत तथा तोड़े
2.5.1	देस राग की विलंबित गत
2.5.2	देस राग की विलंबित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
2.6	सारांश
2.7	शब्दावली
2.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.9	संदर्भ
2.10	अनुशंसित पठन
2.11	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग देस का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग देस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग देस का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- देस राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- देस राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- देस राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- देस राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग देस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 देस राग का परिचय

राग- देस

थाट- खमाज

जाति- औडव-संपूर्ण

वादी- रिषभ

संवादी- पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि), शेष स्वर शुद्ध

वर्जित- आरोह में गंधार तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा, रे म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा

पकड़ - रे म प, नि ध प, ध - म, ग रे ग ऩि-सा

देस राग खमाज थाटका एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी गई है। देस के आरोह में गंधार तथा धैवत वर्जित है तथा अवरोह संपूर्ण है। इसका वादी स्वर रिषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। देस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

देस राग के आरोह में रिषभ का सीधा प्रयोग होता है, जैसे- ऩि सा रे, म प परन्तु अवरोह में रिषभ वक्र है, जैसे- प ध म ग रे ग ऩि सा अर्थात म ग रे सा की जगह म ग रे ग सा किया जाता है।

देस में धैवत तथा मध्यम की संगति प्रमुख है अतः अवरोह में पंचम को अल्प करते हैं, जैसे- सां नि ध प, ध म ग रे ग ऩि सा ।

देस राग के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है, जैसे- रे, म प, नि सां, सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा।

देस राग में रे म ग रे अथवा ऩि सा रे म ग रे स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं तथा प्रत्येक बार मध्यम से रिषभ पर मींड से लौटते हैं। इसी मींड युक्त संगति से देस स्पष्ट हो जाताहै। रिषभ पर पहुंचने के बाद गंधार बजाकर मंद्र निषाद बजाया जाता है तथा फिर षड्ज का प्रयोग होता है, जैसे- म ग रे, ग, ऩि - सा।

इसका समप्रकृतिक राग सोरठ माना जाता है। सोरठ राग में गंधार वर्जित रहता है, जिसके कारण यह देस से अलग हो जाता है जैसे- रे रे, म प, नि ध प, प ध प म ग रे ग सा यह देस राग का स्वर समूह है तथा सा, रे, रे म प, नि सां, नि ध, प म, र, सा यह सोरठ है। तिलक कामोद राग देस का समप्रकृतिक राग है।

तिलक कामोद में सा रे ग, सा ऩि इस प्रकार स्वर समुदाय लेकर निषाद पर न्यास किया जाता है जबकि देस में निषाद पर इस प्रकार न्यास नहीं होता है। देस में रे म ग रे, ग, ऩिसा होता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 देस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) म

2.2 देस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) म

ग) प

घ) सा

2.3 देस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

2.4 देस राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

2.5 देस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) निषाद

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

2.6 देस राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) आरोह में ग

ख) आरोह में नी

ग) आरोह में प

घ) कोई भी नहीं

2.7 देस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) मारवा

घ) आसावरी

2.4 आलाप

- ऩी ऩी सा, सा, रे, ऩी सा, रे म ग रे,

  ऩी सा रे म ग रे, ग, ऩी, सा -।

- सा ऩी ध़ प़ -, प़, म़ प़ ध़ प़, प़,

  ध़ म़ प़, प़ ऩी ऩी सा सा,

- सा रे ऩी ध़ प़, प़, म़ प़ ध़ प़,

  ऩी सा रे ग - ऩी - ऩी सा, सा

- ऩी सा (म)रे म, म प, प, रे म प ध,

  म ग रे, रे म प, नी ध प, प,

  म प म ग रे, ग - ऩी सा

- रे रे म प नी - नी - सां सां,

  सां प नी सां रें - नी ध प,

  प ध म ग रे,

रे रे म ग रे, ग ऩी ऩी सा, सा।

- रे म प नी नी सां,

प नी सां रें मं मं पं,

मं गं रें गं नी नी सां, सां नी

ध प ध - म ग रे,

ग - ऩी ऩी सा सा।

स्वयं जांच अभ्यास 2

2.8 क्या देस राग में रे म ग रे ग सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

2.9 क्या देस राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

2.10 देस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे म प नी ध

ख) रे म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा ऩी

2.5 राग देस की विलंबित गत तथा तोड़े

2.5.1 देस विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											ऩीसा	रे	मम	प	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	पनीसांरें	<u>नी</u>	धध	प	पध	म	गरे	गसा					
दा	दा	रा	दिरदिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर					
अंतरा															
											मम	प	पप	नी	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	नीसां	रें	मंमं	गं	रें	गं	नीनी	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					
											सांरें	<u>नी</u>	धध	प	मप
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	<u>नीनी</u>	ध	प	म	पप	ध	पध	म	गरे	गसा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर					

2.5.2 देस राग की विलंबित गत के तोड़े

•	रे म प नी	सां - - -	रे म प नी	सां - - -	रे म प नी
•	रे रे रे म	म म प प	प नी नी नी	सां रें सां रें	
	सां - - -	सां - - -	रे रे रे म	म म प प	
	प नी नी नी	सां रें सां रें	सां - - -	सां - - -	
	रे रे रे म	म म प प	प नी नी नी	सां रें सां रें	
•	म प नी सां	प नी सां रें	नी सां रें मं	गं रें गं सां	
	रें नी ध प	ध म ग रे	ग सा नी सा		
•	ऩी सा रे म	ग रे ग सा	म प नी ध	प म ग रे	
	नी सां रें मं	गं रें गं सां	नी ध प म	ग रे ग सा	
	रे म प नी	सां - सां -	सां - - -	रे म प नी	
	सां - सां -	सां - - -	रे म प नी	सां - सां -	
•	ऩी सा रे म	ग रे ग सा	सा सा ऩी सा	ऩी सा रे सां	
	ऩी ध़ प़ -	ऩी ऩी सा ऩी	सा सा रे सा	रे रे म रे	
	म म प म	प - रे रे	सां नी ध प	म ग रे सा	
	सां नी प -	रें रें सां नी	ध प म ग	रे ग सा ऩी	
•	- ऩी सा रे	म प नी सां	रें गं रें सां	सां नी ध प	

म ग रे ग	सा - ऩी सा	रे म प नी	सां रें गं रें
गं सां नी ध	प म ग रे	ग सा - ऩी	सा रे म प
नी सां रें गं	रें गं सां नी	ध प म ग	रे ग सा -
• म ग रे म	ग रे ग सा	ऩी सा रे सा	ऩी ध़ प़ ध़
म़ प़ ऩी सा	रे सा रे म	प ध प म	नी सां रें सां
रें मं गं रे	गं सां नी ध	प म ग रे	ग सा ऩी सा
रे म प नी	सां - रे म	प नी सां -	रे म प नी

स्वयं जांच अभ्यास 3

2.11 देस राग की विलंबित गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

2.12 देस राग की विलंबित गत अधिकतर किस मात्रा से शुरू होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 1

घ) 9

2.13 देस राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

2.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

2.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

2.6 सारांश

देस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। देस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

2.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

2.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ग)

2.4 उत्तर: घ)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: क)

2.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

2.8 उत्तर: क)

2.9 उत्तर: ख)

2.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

2.11 उत्तर: ग)

2.12 उत्तर: ख)

2.13 उत्तर: ख)

2.14 उत्तर: ख)

2.15 उत्तर: ग)

2.9 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग देस का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग देस के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग देस की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग देस की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-3
राग पूरिया धनाश्री की विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	पूरिया धनाश्री राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	पूरिया धनाश्री राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
3.5	राग पूरिया धनाश्री की विलंबित गत तथा तोड़े
3.5.1	पूरिया धनाश्री राग की विलम्बित गत
3.5.2	पूरिया धनाश्री राग की विलम्बित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
3.6	सारांश
3.7	शब्दावली
3.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.9	संदर्भ
3.10	अनुशंसित पठन
3.11	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया धनाश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग पूरिया धनाश्री का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया धनाश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 पूरिया धनाश्री राग का परिचय

राग - पूरिया धनाश्री

थाट – पूर्वी

जाति – षाड़व-संपूर्ण

वादी - पंचम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ तथा धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (म॑)अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, पंचम

समय – सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया कल्याण

आरोह: सा ऩी रे ग म॑ प म॑ ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म॑ रे ग रे सा।

पकड़- ऩी रे ग, म॑ प, ध प, म॑ ग म॑ रे ग रे सा।

पूरिया धनाश्री राग, पूर्वी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति षाड़व-संपूर्ण है। पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (मं) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय सांय:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया/गाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, गंधार, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। पूरिया धनाश्री राग में मं रे ग स्वर समुदाय तथा ऩी रे ग स्वर बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) प

ख) म

ग) रे

घ) ग

3.2 पूरिया धनाश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

3.3 पूरिया धनाश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) प्रात:काल

ग) सांयकाल

घ) दोपहर

3.4 पूरिया धनाश्री राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

3.5 पूरिया धनाश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) षड़ज

3.6 पूरिया धनाश्री राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग̱

ग) ध̱

घ) नी̱

3.7 पूरिया धनाश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) पूर्वी

ग) मारवा

घ) आसावरी

3.4 आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे̱ सा, ऩी सा ऩी ऩी रे̱ सा,

  ऩी ध़̱ ऩी ऩी सा।

- सा ऩी ध़̱ प़, ऩी ध़̱ ऩी ऩी रे̱ सा,

  ऩी रे̱ सा, रे̱ ऩी ध़̱ प़, म़॑ ध़̱ प़,

  म़॑ ध़ ऩी रे̱ सा सा।

- ऩी रे̱ ग, रे̱ ग, रे̱ सा ऩी रे̱ सा,

  म़॑ ध़̱ ऩी रे̱ ग, रे̱ ग, रे̱ सा

- ऩी रे, ग म॑ म॑ ध प, प, म॑ ग,

  म॑ रे ग, रे ऩी रे सा

- ग म॑ ध प, प, म॑ ध प, प,

  म॑ ध नी नी ध प, प,

  म॑ ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं॑ मं॑ पं, पं, मं॑ गं,

  मं रें गं, मं॑ गं रें सां

- सां रें नी ध प, प,

  म॑ ध प म॑ ग, म॑ रे ग रे ऩी रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

3.8 क्या पूरिया धनाश्री राग में ग म॑ रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

3.9 क्या पूरिया धनाश्री राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

3.10 पूरिया धनाश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग म॑ ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

3.5 राग पूरिया धनाश्री की विलंबित गत तथा तोड़े

3.5.1 पूरिया धनाश्री विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											नृीरेग	म॑	गग	म॑ध	नीध
											दिरदा	दा	दिर	दिर	दारा
प	प	प	म॑ध	प	म॑रे	ग	नृीरेगम	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दारादारा	दा	दा	रा					
											गग	रे	सासा	नृीरेरे	नृीध
											दारा	दा	दिर	दादिर	दारा
प़	प़	प़	म़॑ध़	नृी	रेरे	ग	म॑	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											पप	म॑	गग	म॑धध	नीरे
											दिरदा	दा	दिर	दिर	दारा
सां	सां	सां	सांसां	नी	रेंरें	गं	मं॑	गं	रें	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											गंगं	रें	सांसां	नीरेंरें	नीध
											दारा	दा	दिर	दादिर	दारा
प	प	प	म॑नी	ध	म॑ध	प	म॑	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

3.5.2 पूरिया धनाश्री राग की विलंबित गत के तोड़े

- ऩीरे॒ गमं॑ | पमं॑ गरे॒ | गग रे॒सा | ऩीरे॒ गमं॑
  पमं॑ गरे॒ | सा ऽ ऽ ऽ
- ऩीरे॒ गमं॑ | ध॒नी नीध॒ | पमं॑ गरे॒ | गग रे॒सा
  गग रे॒सा | ऩीसा ऩी सा
- ऩीरे॒ गग | रे॒सा गग | रे॒ग गरे॒ | गग रे॒सा
  रे॒ग रे॒सा | ऩी सा सा ऽ
- ऩीरे॒ गमं॑ | पमं॑ गरे॒ | गमं॑ पमं॑ | गरे॒ गरे॒
  गग रे॒सा | ऩीसा सा ऽ
- ऩीरे॒ रे॒ग | रे॒ग गमं॑ | गमं॑ मं॑प | पमं॑ गरे॒
  गग रे॒सा | ऩी सा सा ऽ
- नी रे॒ ऽ रे॒ | ग ऽ ग मं॑ | ऽ मं॑ ध॒ ऽ | ध॒ नी ऽ नी
  सां ऽ नी ध॒ | ऽ ध॒ प ऽ | मं॑ ग रे॒ सा | ऽऽ प ऽ
  प ग ऽ ऽ | ऽ ऽ प ऽ | प ग ऽ ऽ
- नीनी ध॒प | मं॑प ध॒प | मं॑प गमं॑ | गरे॒ साऽ
  गमं॑ पग | मं॑ प ग मं॑
- ऩीऽ रे॒ऽ | गऽ मं॑ऽ | पऽ ऽऽ

• ऩीरे ग,रे	गम॑, गम॑	प,म॑ पध	गम॑ धनी
सांऽ सांऽ	सांऽ ऽऽ		
• सांनी धप	म॑ग रेसा	ऩीरे गम॑	गंगं रेंगं
गंरें गंगं	रेंसां नीसां	रेंसां नीसां	
• म॑ध नीसां	रेंसां नीसां	नीनी धप	नीध नीसां
म॑ध नीध	रेंसां नीसां	गंगं रेंसां	रेंसां नीसां
म॑ध धनी	धनी नीसां	रेंसां नीसां	नीध नीसां
• गग रेसा	ऩीसारेसा	ऩीऩी ध़प़	म़प़ ध़प़
म़ध़ ऩीरे	सासा ऩीसा	नीरे गम॑	पम॑ गम॑
गम॑ धनी	सांनीधप	म॑ध नीरें	गरें सांसां
नीरें सांनी	धप म॑प	म॑ध पम॑	गरे सासा
ऩीरे गम॑	पम॑ गरे	साऽ पम॑	गरे साऽ
पम॑ गरे	साऽ ऩीरे	गम॑ पम॑	गरे साऽ
पम॑ गरे	साऽ पम॑	गरे साऽ	ऩीरे गम॑
पम॑ गरे	साऽ पम॑	गरे साऽ	पम॑ गरे
• म़म़ म़,ध़	ध़ध़, ऩीऩी,	ध़ध़ ध़,ऩी	ऩीऩी, सासा,
ऩीऩी ऩी,सा	सासा, रेरे,	सासा सा,रे	रेरे, गग,
रेरे रे,ग	गग, म॑म॑,	गग ग,म॑	म॑म॑, पप,

मंमं म,प	पप, धध,	मंमं मं,ध	धध, नीनी,	
धध ध,नी	नीनी, सांसां,	नीनी नी,सां	सांसा, रेंरें,	
सांसां सां,नी	नीनी,धध	ध,प पप,	मंमं, मंग	
गग, रेरे	रे,सा सासा,	ऩीरे गमं	पऽ ऽऽ	
ऽऽ ऩीरे	गमं पऽ	ऽऽ ऽऽ	ऩीरे गमं	

ऽसाऩीसा	ऽरेसारे	ऽगरेग	ऽमंगमं	
ऽपमंप	ऽधपध	ऽपमंग	ऽमंगरे	
ऽगरेसा	ऽगरेसा	ऽगरेसा		
पमंगरे	साऽऽऽ	पमंगरे	साऽऽऽ	पमंगरे

- पमंगरे साऽपमं गरेसाऽ पमंगरे

सा ऩिऩि ध़ध़ प़प़	म़ ध़ध़ ऩि सा	ऩि रेरे गग मंमं	गऽ गरे ऽरे साऽ	
ऩि रेरे ग मं	रे गग मं ध	प मंमं गग मंमं	गऽ गरे ऽरे साऽ	
ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ		

ऩी रेरे ग मं	रे गग मं ध	ग मंमं ध नी	मं धध नी सां	
ध नीनी रें सां	नीऽ नीध ऽध पऽ	मं धध पप मंमं	गऽ गरे ऽरे साऽ	
ग मंमं ग रे	सा ऽ ऽ ऽ	ग मंमं ग रे	सा ऽ ऽ ऽ	ग मंमं ग रे

गगरेसाऩीसारेसा	ऩीऩीध़प़म़प़ध़प़	म़ध़ऩीरेसासाऩीसा
नीरेगमंपमंगमं	गमंधनीसांनीधप	मंधनीरेंगंरेंसांसां

नीरेंसांनीध॒पम॑प	म॑ध॒पम॑गरे॒सासा	ऩीरे॒गम॑पम॑गरे॒
साऽपम॑गरे॒साऽ	पम॑गरे॒साऽऩीरे॒	गम॑पम॑गरे॒साऽ
पम॑गरे॒साऽपम॑	गरे॒साऽऩीरे॒गम॑	पम॑गरे॒साऽपम॑
गरे॒साऽपम॑गरे॒		

स्वयं जांच अभ्यास 3

3.11 पूरिया धनाश्री राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

3.12 पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

3.13 पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

3.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

3.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

3.6 सारांश

पूरिया धनाश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया धनाश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत तथा द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

3.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

3.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)
3.2 उत्तर: ग)
3.3 उत्तर: ग)
3.4 उत्तर: घ)
3.5 उत्तर: क)
3.6 उत्तर: क)
3.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

3.8 उत्तर: ख)

3.9 उत्तर: ख)

3.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

3.11 उत्तर: ख)

3.12 उत्तर: ग)

3.13 उत्तर: ग)

3.14 उत्तर: ख)

3.15 उत्तर: ग)

3.9 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

3.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया धनाश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया धनाश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया धनाश्री की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग पूरिया धनाश्री की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-4
राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	भीमपलासी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	भीमपलासी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
4.5	राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल तथा तानें
4.5.1	भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल
4.5.2	भीमपलासी राग के बड़े ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
4.6	सारांश
4.7	शब्दावली
4.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.9	संदर्भ
4.10	अनुशंसित पठन
4.11	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (नी़ सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

4.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

4.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

4.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

4.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

4.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

4.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

4.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

4.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

4.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

4.5 राग भीमपलासी का बड़ा ख्याल तथा तानें

4.5.1 भीमपलासी बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

							12
							सासा
							अब
13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
सा	रेरेसानी	नीसा	साम	म	-ग	-ग	नीसा
तो	ऽऽऽऽ	ऽऽ	बड़ि	बे	ऽ	ऽ	ऽ
5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
मगप,	मप	प	मग	मग	रेसा	ऽऽ	ऽऽ
ऽऽऽ	ऽऽऽ,	र	भ	ई	ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	
13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
रेनी	नीनी	नीसा,	साग	रे	सा	नीध	प़
टे	ऽऽ	ऽऽ,	रत	हूँ	ऽ	मैं	ऽ
5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
नीम़	प़	नीनी,	सानी	सा	-	ऩीसा,	सा
क	र	मऽ,	क	रे	ऽ	ऽऽ,	र

13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
सा	रेंसानी	नीसा,	साम	म	-ग-	नी	सा
बा	ऽऽऽऽ	ऽऽ	मांडे	सा	ऽ	ऽ	ऽ

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
मग	प	-,मप	$^{\text{म}}$प	मग	मग	रेसा,	सासा
ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ,	अब

अन्तरा

13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
प	प	ग,म	प	नी	सांसां	सा	$^{\text{प}}$सां
भँ	वर	जं	ऽ	जा	ऽ	ऽल	में

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
-	$^{\text{सा}}$नी$^{\text{सां}}$नी,	सांगं	रेंसा	$^{\text{सां}}$नी	सां	$^{\text{नी}}$ध	प
आ	ऽ	ऽऽ	नफं	सी	ऽ	ऽऽ	हूँऽ

13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
$^{\text{म}}$पग	म	प	गम	ग	रे	सा	$^{\text{सा}}$नी
भ	व	सा	ऽ	ग	र	में	ऽ

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
सानी	- ,	साम	म	-ग-	ऽ	ऽ	ऽ
ग	हे	ऽ,	पक	रो	ऽ	ऽ	ऽ

13	14	15	16	1	2	3	4
3				**x**			
नीसा	मग	प,	मप	प	-	म	ग
ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मोरी	बां	ऽ	ऽ	ऽ

5	6	7	8	9	10	11	12
2				**0**			
ग	नीसा	मगप	-,मप	मप	मग	मग	रेसा,
ऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ,	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ईऽ

4.5.2 भीमपलासी राग की तानें

- गम पनी सांगंरेसा नीध पम गरे सा-
  पनी धप सांगं रेसा नीधपम गमपनी
  धपसांनी धप मग मग रेसा

- पनी धप   मप गम   पनी सांगं   मंगंरेसा
  नीध पम   गरे सा-
- नीध पनी   धप नीध   पम पनी   सांमं रेसा
  नीध   पम गरे   सा-सा-
- गम मप   पनी धप   नीसां गंरे   सांमं गंरें
  सांनी धप   मग रेसा
- नीसां मग   मगरेसा   ऩीसा गम   पम गम
  पनी धप   नीसां गंरें
- सांनी धप   मग रेसा   ऩीसा गग   रेसा नीसा
  गम पप   मप गम   पनी सांसां   नीसां गरे
  सांनीधप   मग रेसा
  ऩीसागम   पग मप   गम पनी   सांनी रेसा
  गंगं रेंसा   मंगं रेसा   नीध पम   गरे सा-
- गमपनी   धपमप   मगरेसा   रेसाऩीऽ
  ऽरेसाऩी   ऽऽरेसा   सांनीधप   मगरेसा
  ऩीसामग   रेसाऩीम   गरेसानी   मगरेसा
- पनी सांगं   रेसा नीसां   पनी धप   मप नीसां

गंगं रेंसा	नीध पम	पनी धप	साग रेसा
• पनी धप	मग गम	पनी सां-	गरे सारे
नीध पध	मप नीसां	गम पनी	सांग रेंसा
मंगं मंगं	रेंसा गरें	सांनी धप	मप नीसां
• मप नीध	पनी धप	नीध पम	पनी सांगं
मंगं रेंसां	पनी सां-		
• नीसां गग	रेसा नीसां	पनी धप	मप गम
साग मप	नीसां गरें	सांनीधप	मप नीसां
• गरें सारें	सांनी धप	गम साग	मप नीसां
गंगं रेंसां	रेंरें सांनी	धप मप	नीसांनीसां
• नीसां गं-	रेसा नीसां	रें- सांनी	धपमप
नी- धप	मप गम	पनी सांगं	रेंसा नीसां
• नीसां गरे	सानी धप	मप गम	मप पनी
सां- गरें	सामं गरे	सांनी धप	मप नीसां
• ऩीऩीऩीरेसा	गममपम	गममपपमम	पऽमगऽरेसाऽ
ऩीऩीऩीरेसा	ऽप़ऽऩी	साऽऽ	ऽपऽऩी
साऽऽऽ	ऽप़ऩी	साऽऽऽ	

- ऩीऽऩीरेसा गममपम मगगरेसा ऽऩीऽऩी

साऽऽऽ मगगरेसा ऽऩीऽऩी साऽऽऽ

मगगरेसा ऽऩीऽऩी साऽऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 3

4.11 भीमपलासी राग के बड़े ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.12 भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में होता है?

क) हां

ख) नहीं

4.13 भीमपलासी राग का बड़ा ख्याल केवल गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

4.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

4.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 11

ख) 3

ग) 9

घ) 12

4.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

4.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

4.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: क)

4.2 उत्तर: ग)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: घ)

4.5 उत्तर: क)

4.6 उत्तर: क)

4.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

4.8 उत्तर: क)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

4.11 उत्तर: ग)

4.12 उत्तर: ख)

4.13 उत्तर: क)

4.14 उत्तर: ख)

4.15 उत्तर: ग)

4.9 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-5
राग देस का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	देस राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	देस राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
5.5	राग देस का बड़ा ख्याल, तथा तानें
5.5.1	देस राग का बड़ा ख्याल
5.5.2	देस राग के बड़े ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
5.6	सारांश
5.7	शब्दावली
5.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.9	संदर्भ
5.10	अनुशंसित पठन
5.11	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग देस का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग देस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग देस का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- देस राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- देस राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- देस राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- देस राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग देस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 देस राग का परिचय

राग- देस

थाट- खमाज

जाति- औडव-संपूर्ण

वादी- रिषभ

संवादी- पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि), शेष स्वर शुद्ध

वर्जित- आरोह में गंधार तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा, रे म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा

पकड़ - रे म प, नि ध प, ध - म, ग रे ग ऩि-सा

देस राग खमाज थाटका एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी गई है। देस के आरोह में गंधार तथा धैवत वर्जित है तथा अवरोह संपूर्ण है। इसका वादी स्वर रिषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। देस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

देस राग के आरोह में रिषभ का सीधा प्रयोग होता है, जैसे- ऩि सा रे, म प परन्तु अवरोह में रिषभ वक्र है, जैसे- प ध म ग रे ग ऩि सा अर्थात म ग रे सा की जगह म ग रे ग सा किया जाता है।

देस में धैवत तथा मध्यम की संगति प्रमुख है अतः अवरोह में पंचम को अल्प करते हैं, जैसे- सां नि ध प, ध म ग रे ग ऩि सा।

देस राग के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है, जैसे- रे, म प, नि सां, सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा।

देस राग में रे म ग रे अथवा ऩि सा रे म ग रे स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं तथा प्रत्येक बार मध्यम से रिषभ पर मींड से लौटते हैं। इसी मींड युक्त संगति से देस स्पष्ट हो जाताहै। रिषभ पर पहुंचने के बाद गंधार बजाकर मंद्र निषाद बजाया जाता है तथा फिर षड्ज का प्रयोग होता है, जैसे- म ग रे, ग, ऩि - सा।

इसका समप्रकृतिक राग सोरठ माना जाता है। सोरठ राग में गंधार वर्जित रहता है, जिसके कारण यह देस से अलग हो जाता है जैसे- रे रे, म प, नि ध प, प ध प म ग रे ग सा यह देस राग का स्वर समूह है तथा सा, रे, रे म प, नि सां, नि ध, प म, र, सा यह सोरठ है। तिलक कामोद राग देस का समप्रकृतिक राग है।

तिलक कामोद में सा रे ग, सा ऩि इस प्रकार स्वर समुदाय लेकर निषाद पर न्यास किया जाता है जबकि देस में निषाद पर इस प्रकार न्यास नहीं होता है। देस में रे म ग रे, ग, ऩिसा होता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 देस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) म

5.2 देस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) म

ग) प

घ) सा

5.3 देस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

5.4 देस राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

5.5 देस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) निषाद

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

5.6 देस राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) आरोह में ग

ख) आरोह में नी

ग) आरोह में प

घ) कोई भी नहीं

5.7 देस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) मारवा

घ) आसावरी

5.4 आलाप

- ऩी ऩी सा, सा, रे, ऩी सा, रे म ग रे,

  ऩी सा रे म ग रे, ग, ऩी, सा -।

- सा <u>ऩी</u> ध़ प़ -, प़, म़ प़ ध़ प़, प़,

  ध़ म़ प़, प़ ऩी ऩी सा सा,

- सा रे ऩी ध़ प़, प़, म़ प़ ध़ प़,

  ऩी सा रे ग - ऩी - ऩी सा, सा

- ऩी सा मरे म, म प, प, रे म प ध,

  म ग रे, रे म प, <u>नी</u> ध प, प,

  म प म ग रे, ग - ऩी सा

- रे रे म प नी - नी - सां सां,

  सां प नी सां रें - <u>नी</u> ध प, प ध म ग रे,

  रे रे म ग रे, ग ऩी ऩी सा, सा।

- रे म प नी नी सां, प नी सां रें मं मं पं,

  मं गं रें गं नी नी सां, सां नी̲

  ध प ध - म ग रे,

  ग - ऩी ऩी सा सा।

स्वयं जांच अभ्यास 2

5.8 क्या देस राग में रे म ग रे ग सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

5.9 क्या देस राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

5.10 देस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे म प नी̲ ध

ख) रे म ग रे̲ सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग̲ रे सा ऩी

5.5 राग देस का बड़ा ख्याल तथा तानें

5.5.1 देस राग बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
								^{म}रे	म	प	नी
								पै	ऽ	यां	प
सांसां	नीध	नी	-	नीध	प	ध	म				
रूं	ऽऽ	ऽ	ऽ	सी	ऽ	स	नी				
								मप	धम	^{म}रे	-
								मांऽ	ऽऽ	डूं	ऽ
-	रेग	रे	रे	मम	गरे	ग	रेसा				
ऽ	पल	क	न	सेंऽ	ऽऽ	ऽ	मग				
								$^{सा}$रे	ऩी	सा	-
								झा	ऽ	रूं	ऽ
^{म}रे	म	म	पधम	गरे	ग	सारे	ऩीसा				
मं	ऽ	द	रऽऽ	आऽ	ऽ	वेऽ	पीऽ				

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
								पम	प	नी	सां
								सा	धो	मा	धो
गरें	रेंगं	रें	सां	रें	नी	सां	सां				
ह	रऽ	जों	सो	क	हो	मो	री				
								नीसां	नीसारें	सां	नीध
								लऽ	गऽऽ	र	हीऽ
प	ध	म	प	म	प	नी	सां				
सु	ध	बु	ध	त	न	म	न				
								गंगं	रेंसां	नीध	मप
								कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
नीऽ	धऽ	पऽ	मऽ	गऽ	रेऽ	गऽ	साऽ				
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ				

5.5.2 देस राग की तानें

- म प नी सां   प नी सां रें   नी सां रें मं   ग रें गं सां
  रें नी ध प   ध म ग रे   ग सा नी सा
- रे रे रे म   म म प प   प नी नी नी   सां रें सां रें

	सां - - -	सां - - -	रे रे रे म	म म प प
	प नी नी नी	सां रें सां रें	सां - - -	सां - - -
	रे रे रे म	म म प प	प नी नी नी	सां रें सां रें
•	ऩी सा रे म	ग रे ग सा	म प नी ध	प म ग रे
	नी सां रें मं	गं रें गं सां	नी ध प म	ग रे ग सा
	रे म प नी	सां - सां -	सां - - -	रे म प नी
	सां - सां -	सां - - -	रे म प नी	सां - सां -

•	रे म प नी	सां - - -	रे म प नी	सां - - -	रे म प नी

•	ऩी सा रे म	ग रे ग सा	सा सा ऩी सा	ऩी सा रे सां
	ऩी ध़ प़ -	ऩी ऩी सा ऩी	सा सा रे सा	रे रे म रे
	म म प म	प - रे रे	सां नी ध प	म ग रे सा
	सां नी प -	रें रें सां नी	ध प म ग	रे ग सा ऩी
•	- ऩी सा रे	म प नी सां	रें गं रें सां	सां नी ध प
	म ग रे ग	सा - ऩी सा	रे म प नी	सां रें गं रें
	गं सां नी ध	प म ग रे	ग सा - ऩी	सा रे म प
	नी सां रें गं	रें गं सां नी	ध प म ग	रे ग सा -
•	म ग रे म	ग रे ग सा	ऩी सा रे सा	ऩी ध़ प़ ध़
	म़ प़ ऩी सा	रे सा रे म	प ध प म	नी सां रें सां

रें मं गं रे	गं सां नी ध	प म ग रे	ग सा ऩी सा
रे म प नी	सां - रे म	प नी सां -	रे म प नी

स्वयं जांच अभ्यास 3

5.11 देस राग के बड़े ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

5.12 देस राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में होता है?

क) हां

ख) नहीं

5.13 देस राग का बड़ा ख्याल केवल एक ताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

5.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

5.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 1

ग) 9

घ) 12

5.6 सारांश

देस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। देस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा

ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

5.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

5.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ग)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: घ)

5.5 उत्तर: क)

5.6 उत्तर: क)

5.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

5.8 उत्तर: क)

5.9 उत्तर: ख)

5.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

5.11 उत्तर: ग)

5.12 उत्तर: ख)

5.13 उत्तर: क)

5.14 उत्तर: ख)

5.15 उत्तर: ग)

5.9 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

5.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग देस का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग देस के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग देस के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग देस के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-6
राग पूरिया धनाश्री का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	पूरिया धनाश्री राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	पूरिया धनाश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
6.5	राग पूरिया धनाश्री का बड़ा ख्याल तथा तानें
6.5.1	पूरिया धनाश्री राग का बड़ा ख्याल
6.5.2	पूरिया धनाश्री राग के बड़े ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
6.6	सारांश
6.7	शब्दावली
6.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.9	संदर्भ
6.10	अनुशंसित पठन
6.11	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया धनाश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया धनाश्री का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया धनाश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 पूरिया धनाश्री राग का परिचय

राग - पूरिया धनाश्री

थाट – पूर्वी

जाति – षाड़व-संपूर्ण

वादी - पंचम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ तथा धैवत कोमल (रे̱ ध̱), मध्यम तीव्र (म॑)अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, पंचम

समय – सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया कल्याण

आरोह: सा ऩी रे̱ ग म॑ प म॑ ध̱ नी सां।

अवरोह: सां, नी ध̱ प, म॑ रे̱ ग रे̱ सा।

पकड़- ऩी रे̱ ग, म॑ प, ध̱ प, म॑ ग म॑ रे̱ ग रे̱ सा।

पूरिया धनाश्री राग, पूर्वी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति षाड़व-संपूर्ण है। पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (म॑) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय सांय:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया/गाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, गंधार, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। पूरिया धनाश्री राग में म॑ रे ग स्वर समुदाय तथा ऩी रे ग स्वर बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) प

ख) म

ग) रे

घ) ग

6.2 पूरिया धनाश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

6.3 पूरिया धनाश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) प्रात:काल

ग) सांयकाल

घ) दोपहर

6.4 पूरिया धनाश्री राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

6.5 पूरिया धनाश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) षड़ज

6.6 पूरिया धनाश्री राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

6.7 पूरिया धनाश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) पूर्वी

ग) मारवा

घ) आसावरी

6.4 आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा,

  ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी रे सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़॑ ध़ प़,

  म़॑ ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़॑ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे॒, ग मं मं ध॒ प, प, मं ग,

  मं रे॒ ग, रे॒ ऩी रे॒ सा

- ग मं ध॒ प, प, मं ध प, प,

  मं ध॒ नी नी ध॒ प, प,

  मं ध॒ नी नी रें॒ सां, सां

- नी रें॒ गं, रें॒ गं, रें॒ सां नी रें॒ सां,

  नी रें॒, गं मं मं पं, पं, मं गं,

  मं रें॒ गं, मं गं रें॒ सां

  सां रें॒ नी ध॒ प, प, मं ध प मं ग, मं

  रे॒ ग रे॒ ऩी रे॒ सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

6.8 क्या पूरिया धनाश्री राग में ग मं रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

6.9 क्या पूरिया धनाश्री राग में ध़॒ ऽ ऩी॒ ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

6.10 पूरिया धनाश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे॒ ग मं ग रे॒ सा

ख) म ग॒ रे सा

ग) रे॒ ग म प ध॒ ऽ,

घ) म ग॒ रे सा

6.5 राग पूरिया धनाश्री का बड़ा ख्याल तथा तानें

6.5.1 पूरिया धनाश्री बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

प्रभु रे तू करतार
जगत के पालनहार
सुन ले मेरी पुकार

अंतरा

और न मांगू
मांगू चरण कमल तोरे
दाता तू खेवनहार

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
								पपम॑	धम॑गरेग	म॑धनीरें	नीधधप
								प्रभुऽ	रे----	तू----	क-र-
प-म॑पप	म॑पम॑	गम॑ग-	गम॑धम॑गरेसा	ध़ऩी	रेगरेसा	रेम॑गगप	पधपम॑गरेसा				
ता---र	जगत	के--	पा-लनहा-र	सुन	ले---	मो--री--	पु-का-र-				
अंतरा											
										म॑ध	म॑
										और	न
धनीसांसां	धनीरेंगंरेंसां	सांसांसां	धनीरेंनी	धपप	धम॑गरेगरेसा	ऩीऩीम॑ म॑ग	गम॑धम॑गरेसा				
मां--गू --	मां--गू --	चरण	क-म-	ल--	तो-----रे-	दा ता- तू	खेवनहार				

6.5.2 पूरिया धनाश्री राग की तानें

- ऩीरे ग,रे गमं, गमं प,मं पध गमं धनी
  सांऽ सांऽ सांऽ ऽऽ

- सांनी धप मंग रेसा ऩीरे गमं गंगं रेंगं
  गरें गंगं रेंसां नीसां रेंसां नीसां

- मंध नीसां रेंसां नीसां नीनी धप नीध नीसां
  मंध नीध रेंसां नीसां गंगं रेंसां रेंसां नीसां
  मंध धनी धनी नीसां रेंसां नीसां नीध नीसां

- ऩीरे गमं पमं गरे गग रेसा ऩीरे गमं
  पमं गरे सा ऽ ऽ ऽ

- ऩीरे गमं धनी नीध पमं गरे गग रेसा
  गग रेसा ऩीसा ऩी सा

- ऩीरे गग रेसा गग रेग गरे गग रेसा
  रेग रेसा ऩी सा सा ऽ

- नी रे ऽ रे ग ऽ ग मं ऽ मं ध ऽ ध नी ऽ नी
  सां ऽ नी ध ऽ ध प ऽ मं ग रे सा ऽऽ प ऽ
  प ग ऽ ऽ ऽ ऽ प ऽ प ग ऽ ऽ

- ऩीरे   गमं   पमं गरे   गमं पमं   गरे गरे
  गग   रेसा   ऩीसा सा ऽ

- ऩीरे   रेग   रेग   गमं   गमं मंप   पमं गरे
  गग   रेसा   ऩी सा सा ऽ

- नीनी धप   मंप धप   मंप गमं   गरे साऽ
  गमं   पग   मं प ग मं

- ऩीऽ रेऽ   गऽ मंऽ   पऽ ऽऽ

- गग   रेसा   ऩीसारेसा   ऩीऩी धप़   म़प़ ध़प़
  म़ध़   ऩीरे   सासा ऩीसा   नीरे गमं   पमं गमं
  गमं   धनी   सांनीधप   मंध नीरें   गरें सांसां
  नीरें   सांनी   धप मंप   मंध पमं   गरे सासा
  ऩीरे   गमं   पमं गरे   साऽ पमं   गरे साऽ
  पमं   गरे   साऽ ऩीरे   गमं पमं   गरे साऽ
  पमं   गरे   साऽ पमं   गरे साऽ   ऩीरे गमं
  पमं   गरे   साऽ पमं   गरे साऽ   पमं गरे

- म़म़   म़,ध़   ध़ध़, ऩीऩी,   ध़ध़ ध़,ऩी   ऩीऩी, सासा,
  ऩीऩी ऩी,सा   सासा, रेरे,   सासा सा,रे   रेरे, गग,
  रेरे   रे,ग   गग, मंमं,   गग ग,मं   मंमं, पप,

	म॑म॑ म॑,प	पप, धध,	म॑म॑ म॑,ध	धध, नीनी,
	धध ध,नी	नीनी, सांसां,	नीनी नी,सां	सांसा, रेंरें,
	सांसां सां,नी	नीनी,धध	ध,प पप,	म॑म॑, म॑ग
	गग, रेरे	रे,सा सासा,	ऩीरे गम॑	पऽ ऽऽ
	ऽऽ ऩीरे	गम॑ पऽ	ऽऽ ऽऽ	ऩीरे गम॑
•	ऽसाऩीसा	ऽरेसारे	ऽगरेग	ऽम॑गम॑
	ऽपम॑प	ऽधपध	ऽपम॑ग	ऽम॑गरे
	ऽगरेसा	ऽगरेसा	ऽगरेसा	
•	पम॑गरे	साऽऽऽ	पम॑गरे	साऽऽऽ
	पम॑गरे			
•	पम॑गरे	साऽपम॑	गरेसाऽ	पम॑गरे
•	सा ऩिऩि ध़ध़ प़प़	म़ ध़ध़ ऩि सा	ऩि रेरे गग म॑म॑	गऽ गरे ऽरे साऽ
	ऩि रेरे ग म॑	रे गग म॑ ध	प म॑म॑ गग म॑म॑	गऽ गरे ऽरे साऽ
	ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ	ऩि रे सा ऽ	
•	ऩी रेरे ग म॑	रे गग म॑ ध	ग म॑म॑ ध नी	म॑ धध नी सां
	ध नीनी रें सां	नीऽ नीध ऽध पऽ	म॑ धध पप म॑म॑	गऽ गरे ऽरे साऽ
	ग म॑म॑ ग रे	सा ऽ ऽ ऽ	ग म॑म॑ ग रे	सा ऽ ऽ ऽ
	ग म॑म॑ ग रे			

- गगरेसाऩीसारेसा ऩीऩीध़प़म़प़ध़प़

  म़॑ध़ऩीरेसासाऩीसा नीरेगम॑पम॑गम॑

  गम॑धनीसांनीधप म॑धनीरेंगंरेंसांसां

  नीरेंसांनीधपम॑प म॑धपम॑गरेसासा

  ऩीरेगम॑पम॑गरे साऽपम॑गरेसाऽ

  पम॑गरेसाऽऩीरे गम॑पम॑गरेसाऽ

  पम॑गरेसाऽपम॑ गरेसाऽऩीरेगम॑

  पम॑गरेसाऽपम॑ गरेसाऽपम॑गरे

स्वयं जांच अभ्यास 3

6.11 पूरिया धनाश्री राग के विलंबित ख्याल को केवल एकताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

6.12 पूरिया धनाश्री राग के विलंबित ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

6.13 पूरिया धनाश्री राग के विलंबित ख्याल में सम पर कौन सा ‘शब्द’ आता है?

क) केवल ‘म’ शब्द ही आता है

ख) केवल ‘घ’ शब्द ही आता है

ग) कोई भी शब्द आ सकता है

घ) सम पर कोई भी शब्द नहीं आता है

6.14 एक ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

6.15 एक ताल में, 12 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

6.6 सारांश

पूरिया धनाश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया धनाश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

6.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

6.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ग)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: क)

6.6 उत्तर: क)

6.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

6.8 उत्तर: ख)

6.9 उत्तर: ख)

6.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

6.11 उत्तर: ख)

6.12 उत्तर: ग)

6.13 उत्तर: ग)

6.14 उत्तर: ख)

6.15 उत्तर: ग)

6.9 संदर्भ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया धनाश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया धनाश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया धनाश्री के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग पूरिया धनाश्री के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-7
राग भीमपलासी की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	भीमपलासी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	भीमपलासी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
7.5	राग भीमपलासी की द्रुत गत तथा तोड़े
7.5.1	भीमपलासी राग की द्रुत गत
7.5.2	भीमपलासी राग की द्रुत गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
7.6	सारांश
7.7	शब्दावली
7.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.9	संदर्भ
7.10	अनुशंसित पठन
7.11	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं।

इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है।

इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

7.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

7.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

7.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

7.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

7.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

7.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

7.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

  म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

7.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

7.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

7.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

7.5 राग भीमपलासी की द्रुत गत तथा तोड़े

7.5.1 भीमपलासी द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								गम	पनी	नीध	पम	ग	रे	ऩी	सा
								दिर	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	रा
म	ऽ	ऽ	ग	ऽ	म	प	ऽ								
दा	ऽ	ऽ	रा	ऽ	दा	रा	ऽ								
अंतरा															
								प	मम	प	ग	ऽ	म	प	ऽ
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ
प	नीनी	प	नी	सां	नी	सां	ऽ								
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								प	नीनी	सां	गं	ऽ	रें	ऽ	सां
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा
नी	सांसां	नी	ध	प	ऽ	ग	म								
दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								

7.5.2 भीमपलासी राग की द्रुत गत के तांड़े

- गम पनी सांगं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- पनी धप सांगं रेसा नीध
- पम गम पनी धप
  सांनी धप मग रेसा
- पनी धप मप गम
  पनी सांगं मंगं रेसा
  नीध पम गरे सा
- नीध पनी धप नीध
  पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- गम मप पनी धप
  नीसां गंरे सामं गरे
  सानी धप मग रेसा
- नीसा मग मग रेसा
  नीसा गम पम गम

	पनी	धप	नीसां	गरे
•	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गग	रेसा	नीसा
	गम	पप	मप	गम
	पनी	सांसां	नीसां	गरे
	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गम	पग	मप
	गम	पनी	सांनी	रेसा
	गंगं	रेंसा	मंगं	रेसा
	नीध	पम	गरे	सा-
•	गम	पनी	धप	मप
	मग	रेसा	रेसा	ऩीऽ
	ऽरे	साऩी	ऽऽ	रेसा
•	सांनी	धप	मग	रेसा
	ऩीसा	मग	रेसा	ऩीम
	गरे	सानी	मग	रेसा
•	पनी	सांगं	रेसा	नीसां
	पनी	धप	मप	नीसां

- गंगं रेंसा नीध पम
  पनी धप साग रेसा
- पनी धप मग गम
  पनी सां - गंरे सारे
  नीध पध मप नीसां
- गम पनी सांग रेंसा
  मंगं मंगं रेंसा गरें
  सानी धप मप नीसां
- मप नीध पनी धप
  नीध पम पनी सांगं
  मंग रेसा पनी सां-
- नीसां गग रेसा नीसां
  पनी धप मप गम
  साग मप नीसां गरें
  सांनी धप मप नीसां
- गरे सारे सानी धप
  गम सांग मप नीसां
  गंगं रेंसां रेंरें सांनी

	धप	मप	नीसां	नीसां
•	नीसां	गं-	रेंसा	नीसां
	रें-	सांनी	धप	मप
	नी-	धप	मप	गम
	पनी	सांगं	रेंसा	नीसां
•	नीसां	गरे	सानी	धप
	मप	गम	मप	पनी
	सां-	गंरें	सामं	गंरे
	सांनी	धप	मप	नीसां

स्वयं जांच अभ्यास 3

7.11 भीमपलासी राग की द्रुत गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

7.12 भीमपलासी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

7.13 भीमपलासी राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

7.14 तीन ताल में, 9 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 9

ख) 8

ग) 10

घ) 1

7.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

7.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

7.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

7.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: घ)

7.5 उत्तर: क)

7.6 उत्तर: क)

7.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

7.8 उत्तर: क)

7.9 उत्तर: ख)

7.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

7.11 उत्तर: ख)

7.12 उत्तर: ग)

7.13 उत्तर: ग)

7.14 उत्तर: ख)

7.15 उत्तर: ग)

7.9 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-8
राग देस की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	देस राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	देस राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
8.5	राग देस की द्रुत गत तथा तोड़े
8.5.1	देस राग की द्रुत गत
8.5.2	देस राग की द्रुत गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
8.6	सारांश
8.7	शब्दावली
8.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.9	संदर्भ
8.10	अनुशंसित पठन
8.11	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग देस का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग देस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग देस का आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- देस राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- देस राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- देस राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- देस राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग देस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 देस राग का परिचय

राग- देस

थाट- खमाज

जाति- औडव-संपूर्ण

वादी- रिषभ

संवादी- पंचम

स्वर - दोनों निषाद (<u>नि</u>, नि), शेष स्वर शुद्ध

वर्जित- आरोह में गंधार तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा, रे म प, नि सां

अवरोह - सां <u>नि</u> ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा

पकड़ - रे म प, <u>नि</u> ध प, ध - म, ग रे ग ऩि-सा

देस राग खमाज थाटका एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी गई है। देस के आरोह में गंधार तथा धैवत वर्जित है तथा अवरोह संपूर्ण है। इसका वादी स्वर रिषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। देस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

देस राग के आरोह में रिषभ का सीधा प्रयोग होता है, जैसे- ऩि सा रे, म प परन्तु अवरोह में रिषभ वक्र है, जैसे- प ध म ग रे ग ऩि सा अर्थात म ग रे सा की जगह म ग रे ग सा किया जाता है।

देस में धैवत तथा मध्यम की संगति प्रमुख है अतः अवरोह में पंचम को अल्प करते हैं, जैसे- सां नि ध प, ध म ग रे ग ऩि सा।

देस राग के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है, जैसे- रे, म प, नि सां, सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा।

देस राग में रे म ग रे अथवा ऩि सा रे म ग रे स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं तथा प्रत्येक बार मध्यम से रिषभ पर मींड से लौटते हैं। इसी मींड युक्त संगति से देस स्पष्ट हो जाताहै।

रिषभ पर पहुंचने के बाद गंधार बजाकर मंद्र निषाद बजाया जाता है तथा फिर षड्ज का प्रयोग होता है, जैसे- म ग रे, ग, ऩि - सा।

इसका समप्रकृतिक राग सोरठ माना जाता है। सोरठ राग में गंधार वर्जित रहता है, जिसके कारण यह देस से अलग हो जाता है जैसे- रे रे, म प, नि ध प, प ध प म ग रे ग सा यह देस राग का स्वर समूह है तथा सा, रे, रे म प, नि सां, नि ध, प म, र, सा यह सोरठ है। तिलक कामोद राग देस का समप्रकृतिक राग है।

तिलक कामोद में सा रे ग, सा ऩि इस प्रकार स्वर समुदाय लेकर निषाद पर न्यास किया जाता है जबकि देस में निषाद पर इस प्रकार न्यास नहीं होता है। देस में रे म ग रे, ग, ऩिसा होता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 देस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) <u>नि</u>

ग) ग

घ) म

8.2 देस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) म

ग) प

घ) सा

8.3 देस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

8.4 देस राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

8.5 देस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) निषाद

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

8.6 देस राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) आरोह में ग

ख) आरोह में नी

ग) आरोह में प

घ) कोई भी नहीं

8.7 देस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) मारवा

घ) आसावरी

8.4 आलाप

- ऩी ऩी सा, सा, रे, ऩी सा, रे म ग रे,

  ऩी सा रे म ग रे, ग, ऩी, सा -।

- सा ऩी ध़ प़ -, प़, म़ प़ ध़ प़, प़,

  ध़ म़ प़, प़ ऩी ऩी सा सा,

- सा रे ऩी ध़ प़, प़, म़ प़ ध़ प़,

  ऩी सा रे ग - ऩी - ऩी सा, सा

- ऩी सा (म)रे म, म प, प,

  रे म प ध,

  म ग रे, रे म प, नी ध प, प,

  म प म ग रे, ग - ऩी सा

- रे रे म प नी - नी - सां सां,

  सां प नी सां रें - नी ध प,

प ध म ग रे,

रे रे म ग रे, ग ऩी ऩी सा, सा।

- रे म प नी नी सां,

प नी सां रें मं मं पं,

मं गं रें गं नी नी सां, सां नी

ध प ध - म ग रे,

ग - ऩी ऩी सा सा।

स्वयं जांच अभ्यास 2

8.8 क्या देस राग में रे म ग रे ग सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

8.9 क्या देस राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

8.10 देस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे म प नी ध

ख) रे म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा ऩी

8.5 राग देस की द्रुत गत तथा तोड़े

8.5.1 देस राग की द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								रे	रेरे	म	प	-	नी	-	नी
								दा	दिर	दा	रा	-	दा	-	रा
सां	-	सां	रें	नी	धध	प	-								
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	-								
								प	नीनी	सांसां	रेंरें	नी-	नीध	-ध	प-
								दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा
प	ध	-	म	ग	रे	ग	सा								
दा	रा	-	दा	रा	दा	दा	रा								
अंतरा															
								म	पप	नी	नी	सां	-	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	-दा	-	दा	रा
नी	सांसां	रें	सां	गं	रेंरें	गं	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								रें	मंमं	गं	रें	गं	सांसां	नी	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
पनी	सारें	सांनी	धप	पध	पम	गरे	गसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								

8.5.2 देस राग की द्रुत गत के तोड़े

• रे म	प नी	सां -	- -
रे म	प नी	सां -	- -
रे म	प नी		
• रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें
सां -	- -	सां -	- -
रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें
सां -	- -	सां -	- -
रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें
• म प	नी सां	प नी	सां रें
नी सां	रें मं	ग रें	गं सां
रें <u>नी</u>	ध प	ध म	ग रे
ग सा	ऩी सा		
• ऩी सा	रे म	ग रे	ग सा
म प	नी ध	प म	ग रे

नी सां	रें मं	गं रें	गं सां
नी ध	प म	ग रे	ग सा
रे म	प नी	सां -	सां -
सां -	- -	रे म	प नी
सां -	सां -	सां -	- -
रे म	प नी	सां -	सां -
• ऩी सा	रे म	ग रे	ग सा
सा सा	ऩी सा	ऩी सा	रे सां
ऩी ध़	प़ -	ऩी ऩी	सा ऩी
सा सा	रे सा	रे रे	म रे
म म	प म	प -	रे रे
सां नी	ध प	म ग	रे सा
सां नी	प -	रें रें	सां नी
ध प	म ग	रे ग	सा ऩी
• - ऩी	सा रे	म प	नी सां
रें गं	रें सां	सां नी	ध प
म ग	रे ग	सा -	ऩी सा
रे म	प नी	सां रें	गं रें

गं सां	नी ध	प म	ग रे
ग सा	- ऩी	सा रे	म प
नी सां	रें गं	रें गं	सां नी
ध प	म ग	रे ग	सा -
● म ग	रे म	ग रे	ग सा
ऩी सा	रे सा	ऩी ध़	प़ ध़
म़ प़	ऩी सा	रे सा	रे म
प ध	प म	नी सां	रें सां
रें मं	गं रे	गं सां	नी ध
प म	ग रे	ग सा	ऩी सा
रे म	प नी	सां -	रे म
प नी	सां -	रे म	प नी

स्वयं जांच अभ्यास 3

8.11 देस राग की द्रुत गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

8.12 देस राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

8.13 देस राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

8.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

8.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

8.6 सारांश

देस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। देस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

8.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

8.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ग)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: घ)

8.5 उत्तर: क)

8.6 उत्तर: क)

8.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

8.8 उत्तर: क)

8.9 उत्तर: ख)

8.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

8.11 उत्तर: ख)

8.12 उत्तर: ग)

8.13 उत्तर: ग)

8.14 उत्तर: ख)

8.15 उत्तर: ग)

8.9 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग देस का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग देस के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग देस की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग देस की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-9
राग पूरिया धनाश्री की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	पूरिया धनाश्री राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	पूरिया धनाश्री राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
9.5	राग पूरिया धनाश्री की द्रुत गत तथा तोड़े
9.5.1	पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत
9.5.2	पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 3
9.6	सारांश
9.7	शब्दावली
9.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.9	संदर्भ
9.10	अनुशंसित पठन
9.11	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह नवम इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया धनाश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग पूरिया धनाश्री का आलाप, , द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया धनाश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 पूरिया धनाश्री राग का परिचय

राग - पूरिया धनाश्री

थाट – पूर्वी

जाति – षाड़व-संपूर्ण

वादी - पंचम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ तथा धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (म)अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, पंचम

समय – सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया कल्याण

आरोह: सा ऩी रे ग म प म ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म रे ग रे सा।

पकड़- ऩी रे ग, म प, ध प, म ग म रे ग रे सा।

पूरिया धनाश्री राग, पूर्वी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति षाड़व-संपूर्ण है। पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (म) तथा अन्य स्वर शुद्ध

लगते हैं। इस राग का वादन समय सांय:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया/गाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, गंधार, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। पूरिया धनाश्री राग में म॑ रे ग स्वर समुदाय तथा ऩी रे ग स्वर बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) प

ख) म

ग) रे

घ) ग

9.2 पूरिया धनाश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

9.3 पूरिया धनाश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) प्रात:काल

ग) सांयकाल

घ) दोपहर

9.4 पूरिया धनाश्री राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

9.5 पूरिया धनाश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) षड़ज

9.6 पूरिया धनाश्री राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

9.7 पूरिया धनाश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) पूर्वी

ग) मारवा

घ) आसावरी

9.4 आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा,

  ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी रे सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ं ध़ प़,

  म़ं ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग मं मं ध प, प, मं ग,

म॑ रे ग, रे ऩी रे सा

- ग म॑ ध प, प, म॑ ध प, प,

  म॑ ध नी नी ध प, प,

  म॑ ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं॑ मं॑ पं, पं, मं॑ गं,

  मं रें गं, मं॑ गं रें सां

- सां रें नी ध प, प,

  म॑ ध प म॑ ग, म॑

  रे ग रे ऩी रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

9.8 क्या पूरिया धनाश्री राग में ग म॑ रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.9 क्या पूरिया धनाश्री राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.10 पूरिया धनाश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग म॑ ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

9.5 राग पूरिया धनाश्री की द्रुत गत तथा तोड़े

9.5.1 पूरिया धनाश्री द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
प	ऽप	प	प	म॑	धध	प	ऽ	ऽ	म॑म॑	गग	म॑म॑	गम॑	म॑रे	ऽरे	ग
दा	ऽर	दा	रा	दा	दिर	दा	-	-	दिर	दिर	दिर	दारा	दादा	-रा	दा
ऩी	रेरे	ग	म॑	ध	नीनी	रें	नी	नीरें	नीध	नीध	पध	पम॑	पम॑	गम॑	रेग
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दारा	दादा	रादा	दारा	दारा	दादा	रादा	दारा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा															
प	म॑म॑	प	ग	म॑	म॑	ध	नी	सां	ऽसां	सां	सां	नी	रेंरें	सां	ऽ
दा	दिर	दा	दा	-र	दा	दा	रा	दा	-र	दा	रा	दा	दिर	दा	-
नी	रेंरें	गंगं	मं॑मं॑	गंऽ	गंरें	ऽरें	सांऽ	नीरें	गंगं	रेंसां	म॑ध	नीनी	धप	म॑प	गम॑
दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा-	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा

9.5.2 पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत के तांड़े

• ऩीरे	गमं	पमं	गरे
गग	रेसा	ऩीरे	गमं
पमं	गरे	सा ऽ	ऽ ऽ
• ऩीरे	गमं	धनी	नीध
पमं	गरे	गग	रेसा
गग	रेसा	ऩीसा	ऩी सा
• ऩीरे	गग	रेसा	गग
रेग	गरे	गग	रेसा
रेग	रेसा	ऩी सा	सा ऽ
• ऩीरे	गमं	पमं	गरे
गमं	पमं	गरे	गरे
गग	रेसा	ऩीसा	सा ऽ
• ऩीरे	रेग	रेग	गमं
गमं	मंप	पमं	गरे
गग	रेसा	ऩी सा	सा ऽ
• नी रे	ऽ रे	ग ऽ	ग मं

	ऽ म॑	ध ऽ	ध नी	ऽ नी
	सां ऽ	नी ध	ऽ ध	प ऽ
	म॑ ग	रे सा	ऽऽ	प ऽ
	प ग	ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ऽ
	प ग	ऽ ऽ		
•	नीनी	धप	म॑प	धप
	म॑प	गम॑	गरे	साऽ
	गम॑	पग	म॑ प	ग म॑
•	ऩीऽ	रेऽ	गऽ	म॑ऽ
	पऽ	ऽऽ		
•	ऩीरे	ग,रे	गम॑,	गम॑
	प,म॑	पध	गम॑	धनी
	सांऽ	सांऽ	सांऽ	ऽऽ
•	सांनी	धप	म॑ग	रेसा
	ऩीरे	गम॑	गंगं	रेंगं
	गंरें	गंगं	रेंसां	नीसां
	रेंसां	नीसां		
•	म॑ध	नीसां	रेंसां	नीसां

नीनी	धप	नीध	नीसां
म॑ध	नीध	रेंसां	नीसां
गंगं	रेंसां	रेंसां	नीसां
म॑ध	धनी	धनी	नीसां
रेंसां	नीसां	नीध	नीसां
• गग	रेसा	ऩीसा	रेसा
ऩीऩी	ध़प़	म़प़	ध़प़
म़ध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा
नीरे	गम॑	पम॑	गम॑
गम॑	धनी	सांनी	धप
म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	धप	म॑प
म॑ध	पम॑	गरे	सासा
ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे
साऽ	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे
गम॑	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	पम॑

गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑
पम॑	गरे	साऽ	पम॑
गरे	साऽ	पम॑	गरे
• म़म़	म़,ध़	ध़ध़,	ऩीऩी,
ध़ध़	ध़,ऩी	ऩीऩी,	सासा,
ऩीऩी	ऩी,सा	सासा,	रेरे,
सासा	सा,रे	रेरे,	गग,
रेरे	रे,ग	गग,	म॑म॑,
गग	ग,म॑	म॑म॑,	पप,
म॑म॑	म॑,प	पप,	धध,
म॑म॑	म॑,ध	धध,	नीनी,
धध	ध,नी	नीनी,	सांसां,
नीनी	नी,सां	सांसा,	रेंरें,
सांसां	सां,नी	नीनी,	धध
ध,प	पप,	म॑म॑,	म॑ग
गग,	रेरे	रे,सा	सासा,
ऩीरे	गम॑	पऽ	ऽऽ
ऽऽ	ऩीरे	गम॑	पऽ

	ऽऽ	ऽऽ	ऩीरे	गम॑
•	ऽसा	ऩीसा	ऽरे	सारे
	ऽग	रेग	ऽम॑ग	म॑
	ऽप	म॑प	ऽध	पध
	ऽप	म॑ग	ऽम॑	गरे
	ऽग	रेसा	ऽग	रेसा
	ऽग	रेसा	पम॑	गरे
	साऽ	ऽऽ	पम॑	गरे
	साऽ	ऽऽ	पम॑	गरे
•	पम॑	गरे	साऽ	पम॑
	गरे	साऽ	पम॑	गरे
•	पम॑	गरे	साऽ	पम॑
	गरे	साऽ	पम॑	गरे
•	सा ऽ	ऩिऩि	ध़ध	प़प़
	म़ऽ	ध़ध़	ऩि सा	ऩिऽ
	रेरे	गग	म॑म॑	गऽ
	गरे	ऽरे	साऽ	ऩिऽ
	रेरे	ग म॑	रेऽ	गग

म॑ध	पऽ	म॑म॑	गग
म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे
साऽ	ऩि रे	ऩी रे	ऩी रे
• गग	रेसा	ऩीसा	रेसा
ऩीऩी	ध़प़	म़प़	ध़प़
म़॑ध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा
नीरे	गम॑	पम॑	गम॑
गम॑	धनी	सांनी	धप
म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	धप	म॑प
म॑ध	पम॑	गरे	सासा
ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे
साऽ	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे
गम॑	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	पम॑
गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑
पम॑	गरे	साऽ	पम॑

गरे̱ सा ऽ पमं गरे̱

स्वयं जांच अभ्यास 3

9.11 पूरिया धनाश्री राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

9.12 पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

9.13 पूरिया धनाश्री राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

9.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

9.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

9.6 सारांश

पूरिया धनाश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया धनाश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

9.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

9.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ग)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: क)

9.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

9.8 उत्तर: ख)

9.9 उत्तर: ख)

9.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

9.11 उत्तर: ख)

9.12 उत्तर: ग)

9.13 उत्तर: ग)

9.14 उत्तर: ख)

9.15 उत्तर: ग)

9.9 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

डॉ. ज्ञान सांगटा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

9.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया धनाश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया धनाश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया धनाश्री की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग पूरिया धनाश्री की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-10
राग भीमपलासी का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	भीमपलासी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	भीमपलासी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
10.5	राग भीमपलासी का छोटा ख्याल तथा तानें
10.5.1	भीमपलासी राग का छोटा ख्याल 1
10.5.2	भीमपलासी राग का छोटा ख्याल 2
10.5.3	भीमपलासी राग के छोटे ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
10.6	सारांश
10.7	शब्दावली
10.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.9	संदर्भ
10.10	अनुशंसित पठन
10.11	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भीमपलासी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भीमपलासी का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- भीमपलासी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भीमपलासी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भीमपलासी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 भीमपलासी राग का परिचय

राग - भीमपलासी

थाट – काफी

जाति – औड़व-संपूर्ण

वादी – मध्यम

संवादी – षड़ज

स्वर - गांधार, निषाद कोमल तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में रिषभ, धैवत

न्यास के स्वर – षड़ज, मध्यम, पंचम

समय - दिन का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – धनाश्री

आरोह:- ऩी सा, ग म प नी सां।

अवरोह:- सां नी ध प, म प, म ग रे सा।

पकड़:- नी सा म, प ग म ग रे सा

मधुर व लोकप्रिय, भीमपलासी राग का थाट काफी है। इस राग की जाति औड़व-संपूर्ण है। भीमपलासी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में कोमल गांधार तथा कोमल निषाद का प्रयोग होता है व अन्य स्वर शुद्ध हैं। आरोह में रिषभ, धैवत स्वर वर्जित हैं। इस राग का गायन समय दिन का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से आरम्भ किया जाता है (ऩी सा ग म प)। इस राग में षड़ज, मध्यम, पंचम पर न्यास किया जाता है। इसमें प ग स्वरों की संगति विशेष है (नी सा म, प ग, म ग रे सा)। मंद्र तथा मध्य सप्तक में इस राग को गाने में अधिक सौंदर्य बोध होता है। इसका समप्रकृतिक राग धनाश्री है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 भीमपलासी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) सा

घ) ग

10.2 भीमपलासी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) म

10.3 भीमपलासी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) मध्य रात्रि

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.4 भीमपलासी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) तानसेन

घ) अज्ञात

10.5 भीमपलासी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

10.6 भीमपलासी राग में किस स्वर को अधिकतर आन्दोलित किया जाता है?

क) नी

ख) प

ग) ध

घ) सा

10.7 भीमपलासी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) मारवा

घ) देस

10.4 आलाप

- सा, ऩी सा ग रे सा, ऩी सा ग म,

  ग म ग रे सा ऩी सा,

- सा रे सा, ऩी ध़ प़ प़,

  म़ प़ ऩी ऩी सा,

- ऩी सा ग म म प, प, म प नी ध प,

म प नी नी सां सां

- प नी सां गं रें सां, मं गं रें सां,

  सां, नी ध प, म प म ग रे सा, सा

- ऩी सा म म, ग म रे सा, सा रे

  ऩी सा ग म प, म ग रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

10.8 क्या भीमपलासी राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.9 क्या भीमपलासी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ गस्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.10 भीमपलासी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) ग म रे सा

घ) म ग रे सा

10.5 राग भीमपलासी का छोटा ख्याल तथा तानें

10.5.1 भीमपलासी छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
														(म)प	-
														जा	ऽ
(म)ग	-	रे	सा	रे	नी	सा	-	(नि)सा	-	(सा)म	म	म	-	(म)नी	प
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽ	जा	ऽ
(म)ग	(म)ग	रे	सा	रे	नी	सा	-	(नी)सा	-	(सा)म	म	म	-	(म)ग	म
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	मं	ऽ	दि	र	वा	ऽ	सु	न
प(सां)	नी	सां	गं	रें	-	सां	-	रें	नी	सां	प	(म)ग	-	प	-
पा	ऽ	वे	ऽ	गी	ऽ	सा	ऽ	स	न	न	दि	या	ऽ	जा	ऽ
अन्तरा															
प	प	प	म	प	-	ग	म	प	प	(सां)नी	(सां)नी	सां	सां	सां	-
सु	न	हो	स	दा	ऽ	रं	ग	तु	म	को	चा	ह	त	है	ऽ
(सां)नी	(सां)नी	सां	गं	रें	रें	सां	-	(सां)नी	नी	सां	सां	प	म	नी	प
क्या	ऽ	तु	म	ह	म	को	ऽ	छ	ग	न	दि	या	ऽ,	जा	ऽ
(म)ग	(म)ग	रे	सा	रे	ऩी	सा	-								
जा	ऽ	रे	ऽ	अ	प	ने	ऽ								

10.4.3 भीमपलासी राग की तानें

- गम पनी धप मप
  मग रेसा रेसा ऩीऽ
  ऽरे साऩी ऽऽ रेसा
- गम पनी सांगं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- पनी धप सांगं रेसा नीध
- पम गम पनी धप
  सांनी धप मग रेसा
- पनी धप मप गम
  पनी सांगं मंगं रेसा
  नीध पम गरे सा
- नीध पनी धप नीध
  पम पनी सांमं रेसा
  नीध पम गरे सा-
- गम मप पनी धप
  नीसां गंरे सामं गरे

	सानी	धप	मग	रेसा
•	नीसा	मग	मग	रेसा
	नीसा	गम	पम	गम
	पनी	धप	नीसां	गरे
•	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गग	रेसा	नीसा
	गम	पप	मप	गम
	पनी	सांसां	नीसां	गरे
	सांनी	धप	मग	रेसा
•	ऩीसा	गम	पग	मप
	गम	पनी	सांनी	रेसा
	गंगं	रेंसा	मंगं	रेसा
	नीध	पम	गरे	सा-
•	सांनी	धप	मग	रेसा
	ऩीसा	मग	रेसा	ऩीम
	गरे	सानी	मग	रेसा
•	पनी	सांगं	रेसा	नीसां
	पनी	धप	मप	नीसां

•	गंगं	रेंसा	नीध	पम
	पनी	धप	साग	रेसा
•	पनी	धप	मग	गम
	पनी	सां -	गंरे	सारे
	नीध	पध	मप	नीसां
•	गम	पनी	सांग	रेंसा
	मंगं	मंगं	रेंसा	गरें
	सानी	धप	मप	नीसां
•	मप	नीध	पनी	धप
	नीध	पम	पनी	सांगं
	मंग	रेसा	पनी	सां-
•	नीसां	गग	रेसा	नीसां
	पनी	धप	मप	गम
	साग	मप	नीसां	गरें
	सांनी	धप	मप	नीसां
•	गरे	सारे	सानी	धप
	गम	सांग	मप	नीसां
	गंगं	रेंसां	रेंरें	सांनी

धप	मप	नीसां	नीसां
• नीसां	गं-	रेसा	नीसां
रें-	सांनी	धप	मप
नी-	धप	मप	गम
पनी	सांगं	रेंसा	नीसां
• नीसां	गरे	सानी	धप
मप	गम	मप	पनी
सां-	गंरें	सामं	गंरे
सांनी	धप	मप	नीसां

स्वयं जांच अभ्यास 3

10.11 भीमपलासी राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

10.12 भीमपलासी राग के छोटे ख्याल में सम पर कौन सा अक्षर (शब्द) आता है?

क) सम

ख) प

ग) कोई भी

घ) कोई भी अक्षर नहीं आता

10.13 तीन ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

10.14 तीन ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

10.6 सारांश

भीमपलासी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भीमपलासी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

10.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

10.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ग)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

10.8 उत्तर: क)

10.9 उत्तर: ख)

10.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

10.11 उत्तर: ग)

10.12 उत्तर: ग)

10.13 उत्तर: ख)

10.14 उत्तर: ग)

10.9 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

10.10 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

10.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भीमपलासी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भीमपलासी के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-11
राग देस का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	देस राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	देस राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
11.5	राग देस का छोटा ख्याल तथा तानें
11.5.1	देस राग का छोटा ख्याल
11.5.2	देस राग के छोटे ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
11.6	सारांश
11.7	शब्दावली
11.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.9	संदर्भ
11.10	अनुशंसित पठन
11.11	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग देस का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग देस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग देस का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- देस राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- देस राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- देस राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- देस राग के आलाप, , छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- देस राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग देस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 देस राग का परिचय

राग- देस

थाट- खमाज

जाति- औडव-संपूर्ण

वादी- रिषभ

संवादी- पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि), शेष स्वर शुद्ध

वर्जित- आरोह में गंधार तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा, रे म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा

पकड़ - रे म प, नि ध प, ध - म, ग रे ग ऩि-सा

देस राग खमाज थाटका एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी गई है। देस के आरोह में गंधार तथा धैवत वर्जित है तथा अवरोह संपूर्ण है। इसका वादी स्वर रिषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। देस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर है।

देस राग के आरोह में रिषभ का सीधा प्रयोग होता है, जैसे- ऩि सा रे, म प परन्तु अवरोह में रिषभ वक्र है, जैसे- प ध म ग रे ग ऩि सा अर्थात म ग रे सा की जगह म ग रे ग सा किया जाता है।

देस में धैवत तथा मध्यम की संगति प्रमुख है अतः अवरोह में पंचम को अल्प करते हैं, जैसे- सां नि ध प, ध म ग रे ग ऩि सा।

देस राग के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है, जैसे- रे, म प, नि सां, सां नि ध प, ध म ग रे, ग ऩि सा।

देस राग में रे म ग रे अथवा ऩि सा रे म ग रे स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं तथा प्रत्येक बार मध्यम से रिषभ पर मींड से लौटते हैं। इसी मींड युक्त संगति से देस स्पष्ट हो जाताहै।

रिषभ पर पहुंचने के बाद गंधार बजाकर मंद्र निषाद बजाया जाता है तथा फिर षड्ज का प्रयोग होता है, जैसे- म ग रे, ग, ऩि - सा।

इसका समप्रकृतिक राग सोरठ माना जाता है। सोरठ राग में गंधार वर्जित रहता है, जिसके कारण यह देस से अलग हो जाता है जैसे- रे रे, म प, नि ध प, प ध प म ग रे ग सा यह देस राग का स्वर समूह है तथा सा, रे, रे म प, नि सां, नि ध, प म, र, सा यह सोरठ है। तिलक कामोद राग देस का समप्रकृतिक राग है।

तिलक कामोद में सा रे ग, सा ऩि इस प्रकार स्वर समुदाय लेकर निषाद पर न्यास किया जाता है जबकि देस में निषाद पर इस प्रकार न्यास नहीं होता है। देस में रे म ग रे, ग, ऩिसा होता है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 देस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) <u>नि</u>

ग) ग

घ) म

11.2 देस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) म

ग) प

घ) सा

11.3 देस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

11.4 देस राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

11.5 देस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) निषाद

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

11.6 देस राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) आरोह में ग

ख) आरोह में नी

ग) आरोह में प

घ) कोई भी नहीं

11.7 देस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) खमाज

ग) मारवा

घ) आसावरी

11.4 आलाप

- ऩी ऩी सा, सा, रे, ऩी सा, रे म ग रे,

  ऩी सा रे म ग रे, ग, ऩी, सा -।

- सा ऩी ध़ प़ -, प़, म़ प़ ध़ प़, प़,

  ध़ म़ प़, प़ ऩी ऩी सा सा,

- सा रे ऩी ध़ प़, प़, म़ प़ ध़ प़,

  ऩी सा रे ग - ऩी - ऩी सा, सा

- ऩी सा मरे म, म प, प, रे म प ध,

  म ग रे, रे म प, नी ध प, प,

  म प म ग रे, ग - ऩी सा

- रे रे म प नी - नी - सां सां,

  सां प नी सां रें - नी ध प,

  प ध म ग रे,

रे रे म ग रे, ग ऩी ऩी सा, सा।

- रे म प नी नी सां,

प नी सां रें मं मं पं,

मं गं रें गं नी नी सां, सां नी

ध प ध - म ग रे,

ग - ऩी ऩी सा सा।

स्वयं जांच अभ्यास 2

11.8 क्या देस राग में रे म ग रे ग सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.9 क्या देस राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.10 देस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे म प नी ध

ख) रे म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा ऩी

11.5 राग देस का छोटा ख्याल तथा तानें

11.5.1 देस राग छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

स्थाई

तुम बिन अब बृजराज दुलारी कल न परत है बृजनीयन को हरी।

अन्तरा

लागी लगन अब तुम्हारे दरस की बाट तकत हैं सब गोपियन खड़ी ॥

x				2				0				3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
								नि	ध	प	म	ग	रे	म	प
								तु	म	बि	न	अ	ब	बृ	ज
नि	-	सा	रे	सा	नि	ध	प	म	ग	रे	ग	नि	नि	सा	सा
रा	ऽ	ज	दु	ला	ऽ	री	ऽ	क	ल	न	प	र	त	है	ऽ
रे	म	प	नि	ध	प	म	ग								
बृ	ज	नी	य	न	को	ह	री								
अन्तरा															
								म	प	नि	नि	सां	नि	सां	सां
								ला	ऽ	गी	ल	ग	न	अ	ब
नि	सां	रें	मं	गं	रें	नि	सां	प	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
तु	म्हा	रे	द	र	स	की	ऽ	बा	ऽ	ट	त	क	त	हैं	ऽ
रे	म	प	नि	ध	प	म	ग								
स	ब	गो	पि	य	न	ख	ड़ी								

11.5.2 देस राग की तानें

•

रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें
सां -	- -	सां -	- -
रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें
सां -	- -	सां -	- -
रे रे	रे म	म म	प प
प नी	नी नी	सां रें	सां रें

•

म प	नी सां	प नी	सां रें
नी सां	रें मं	ग रें	गं सां
रें <u>नी</u>	ध प	ध म	ग रे
ग सा	ऩी सा		

•

रे म	प नी	सां -	- -
रे म	प नी	सां -	- -
रे म	प नी		

•

ऩी सा	रे म	ग रे	ग सा
म प	नी ध	प म	ग रे

नी सां	रें मं	गं रें	गं सां
नी ध	प म	ग रे	ग सा
रे म	प नी	सां -	सां -
सां -	- -	रे म	प नी
सां -	सां -	सां -	- -
रे म	प नी	सां -	सां -

•

ऩी सा	रे म	ग रे	ग सा
सा सा	ऩी सा	ऩी सा	रे सां
ऩी ध़	प़ -	ऩी ऩी	सा ऩी
सा सा	रे सा	रे रे	म रे
म म	प म	प -	रे रे
सां नी	ध प	म ग	रे सा
सां नी	प -	रें रें	सां नी
ध प	म ग	रे ग	सा ऩी

•

- ऩी	सा रे	म प	नी सां
रें गं	रें सां	सां नी	ध प
म ग	रे ग	सा -	ऩी सा
रे म	प नी	सां रें	गं रें

गं सां	नी ध	प म	ग रे
ग सा	- ऩी	सा रे	म प
नी सां	रें गं	रें गं	सां नी
ध प	म ग	रे ग	सा -
म ग	रे म	ग रे	ग सा
ऩी सा	रे सा	ऩी ध़	प़ ध़
म़ प़	ऩी सा	रे सा	रे म
प ध	प म	नी सां	रें सां
रें मं	गं रे	गं सां	नी ध
प म	ग रे	ग सा	ऩी सा
रे म	प नी	सां -	रे म
प नी	सां -	रे म	प नी

स्वयं जांच अभ्यास 3

11.11 देस राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

11.12 देस राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में ही होता है?

क) हां

ख) नहीं

11.13 देस राग का छोटा ख्याल केवल एक ताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

11.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

11.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 1

ग) 9

घ) 12

11.6 सारांश

देस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। देस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटे ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

11.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

11.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ग)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: क)

11.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

11.8 उत्तर: क)

11.9 उत्तर: ख)

11.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

11.11 उत्तर: ग)

11.12 उत्तर: ख)

11.13 उत्तर: क)

11.14 उत्तर: ख)

11.15 उत्तर: ग)

11.9 संदर्भ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग देस का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग देस के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग देस के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग देस के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-12
राग पूरिया धनाश्री का छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	पूरिया धनाश्री राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	पूरिया धनाश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	स्वयं जांच अभ्यास 2
12.5	राग पूरिया धनाश्री का छोटा ख्याल तथा तानें
12.5.1	पूरिया धनाश्री राग का छोटा ख्याल 1
12.5.2	पूरिया धनाश्री राग के छोटे ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 3
12.6	सारांश
12.7	शब्दावली
12.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.9	संदर्भ
12.10	अनुशंसित पठन
12.11	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग पूरिया धनाश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग पूरिया धनाश्री का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- पूरिया धनाश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- पूरिया धनाश्री राग के आलाप, , छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग पूरिया धनाश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 पूरिया धनाश्री राग का परिचय

राग - पूरिया धनाश्री

थाट – पूर्वी

जाति – षाड़व-संपूर्ण

वादी - पंचम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ तथा धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (मं)अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, पंचम

समय – सांयकाल

समप्रकृतिक राग – पूरिया कल्याण

आरोह: सा ऩी रे ग मं प मं ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, मं रे ग रे सा।

पकड़- ऩी रे ग, मं प, ध प, मं ग मं रे ग रे सा।

पूरिया धनाश्री राग, पूर्वी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति षाड़व-संपूर्ण है। पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, धैवत कोमल (रे ध), मध्यम तीव्र (म॑) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय सांय:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया/गाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, गंधार, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। पूरिया धनाश्री राग में म॑ रे ग स्वर समुदाय तथा ऩी रे ग स्वर बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 पूरिया धनाश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) प

ख) म

ग) रे

घ) ग

12.2 पूरिया धनाश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

12.3 पूरिया धनाश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) प्रात:काल

ग) सांयकाल

घ) दोपहर

12.4 पूरिया धनाश्री राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

12.5 पूरिया धनाश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) षड़ज

12.6 पूरिया धनाश्री राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

12.7 पूरिया धनाश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) पूर्वी

ग) मारवा

घ) आसावरी

12.4 आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा,

  ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी रे सा,

  ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़' ध़ प़,

  म़' ध़ ऩी रे सा सा।

- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा,

  म़' ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

- ऩी रे, ग मं मं ध प, प, मं ग,

  मं रे ग, रे ऩी रे सा

- ग मं ध प, प, मं ध प, प,

  मं ध नी नी ध प, प,

  मं ध नी नी रें सां, सां

- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां,

  नी रें, गं मं मं पं, पं, मं गं,

  मं रें गं, मं गं रें सां

  सां रें नी ध प, प, मं ध प मं ग, मं

  रे ग रे ऩी रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 2

12.8 क्या पूरिया धनाश्री राग में ग मं रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.9 क्या पूरिया धनाश्री राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.10 पूरिया धनाश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग मं ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

12.5 राग पूरिया धनाश्री का छोटा ख्याल तथा तानें

12.5.1 पूरिया धनाश्री राग का छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

स्थाई: पायलिया झनकार मोरि झनन झनन बाजे झनकारी

अंतरा: पिया समझाऊँ समझत नाहीं सास ननद मौरी देगी गारि

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								प	-	ध	ग	म॑	ध	रे	नि
								पा	s	य	लि	या	s	झ	न
ध	-	प	प	-	प	-	प								
का	s	s	र	s	मो	s	री								
								म॑	म॑ध	म॑	ग	म॑	रे	ग	-
								झ	नs	न	झ	न	न	बा	s
म॑	रे	ग	म॑	ग	रे	सा	-								
जे	s	झ	न	का	s	री	s								
अंतरा															
								म॑	म॑	ग	ग	म॑	-	ध	-
								पि	या	स	म	झा	s	ऊँ	s
सां	सां	सां	सां	रें	-	सा	-								
स	म	झ	त	ना	s	हीं	s								
								नि	रें	ग	रें	नि	रें	सा	-
								सा	s	स	न	न	द	मो	s
नि	ध	नि	रें	नि	नि	ध	प								
री	s	दे	s	गि	गा	s	रि								

12.5.2 पूरिया धनाश्री राग की तानें

• नीनी	धप	मंप	धप
मंप	गमं	गरे	साऽ
गमं	पग	मं प	ग मं
• ऩीऽ	रेऽ	गऽ	मंऽ
पऽ	ऽऽ		
• ऩीरे	गमं	पमं	गरे
गग	रेसा	ऩीरे	गमं
पमं	गरे	सा ऽ	ऽ ऽ
• ऩीरे	गमं	धनी	नीध
पमं	गरे	गग	रेसा
गग	रेसा	ऩीसा	ऩी सा
• ऩीरे	गग	रेसा	गग
रेग	गरे	गग	रेसा
रेग	रेसा	ऩी सा	सा ऽ
• ऩीरे	गमं	पमं	गरे
गमं	पमं	गरे	गरे

गग	रेसा	ऩीसा	सा ऽ
• ऩीरे	रेग	रेग	गमं
गमं	मंप	पमं	गरे
गग	रेसा	ऩी सा	सा ऽ
• नी रे	ऽ रे	ग ऽ	ग मं
ऽ मं	ध ऽ	ध नी	ऽ नी
सां ऽ	नी ध	ऽ ध	प ऽ
मं ग	रे सा	ऽऽ	प ऽ
प ग	ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ऽ
प ग	ऽ ऽ		
• ऩीरे	ग,रे	गमं,	गमं
प,मं	पध	गमं	धनी
सांऽ	सांऽ	सांऽ	ऽऽ
• सांनी	धप	मंग	रेसा
ऩीरे	गमं	गंगं	रेंगं
गरें	गंगं	रेंसां	नीसां
रेंसां	नीसां		
• मंध	नीसां	रेंसां	नीसां

नीनी	धप	नीध	नीसां
म॑ध	नीध	रेंसां	नीसां
गंगं	रेंसां	रेंसां	नीसां
म॑ध	धनी	धनी	नीसां
रेंसां	नीसां	नीध	नीसां
• गग	रेसा	ऩीसा	रेसा
ऩीऩी	ध़प़	म़प़	ध़प़
म़ध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा
नीरे	गम॑	पम॑	गम॑
गम॑	धनी	सांनी	धप
म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	धप	म॑प
म॑ध	पम॑	गरे	सासा
ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे
साऽ	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे
गम॑	पम॑	गरे	साऽ
पम॑	गरे	साऽ	पम॑

गरे	साऽ	ऩीरे	गमं
पमं	गरे	साऽ	पमं
गरे	साऽ	पमं	गरे

-

म़म़	म़,ध़	ध़ध़,	ऩीऩी,
ध़ध़	ध़,ऩी	ऩीऩी,	सासा,
ऩीऩी	ऩी,सा	सासा,	रेरे,
सासा	सा,रे	रेरे,	गग,
रेरे	रे,ग	गग,	मंमं,
गग	ग,मं	मंमं,	पप,
मंमं	मं,प	पप,	धध,
मंमं	मं,ध	धध,	नीनी,
धध	ध,नी	नीनी,	सांसां,
नीनी	नी,सां	सांसा,	रेंरें,
सांसां	सां,नी	नीनी,	धध
ध,प	पप,	मंमं,	मंग
गग,	रेरे	रे,सा	सासा,
ऩीरे	गमं	पऽ	ऽऽ
ऽऽ	ऩीरे	गमं	पऽ

	ऽऽ	ऽऽ	ऩीरे॒	गम॑
•	ऽसा	ऩीसा	ऽरे॒	सारे॒
	ऽग	रे॒ग	ऽम॑ग	म॑
	ऽप	म॑प	ऽध॒	पध॒
	ऽप	म॑ग	ऽम॑	गरे॒
	ऽग	रे॒सा	ऽग	रे॒सा
	ऽग	रे॒सा	पम॑	गरे॒
	साऽ	ऽऽ	पम॑	गरे॒
	साऽ	ऽऽ	पम॑	गरे॒
•	पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑
	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒
•	पम॑	गरे॒	साऽ	पम॑
	गरे॒	साऽ	पम॑	गरे॒
•	सा ऽ	ऩिऩि	ध़॒ध़॒	प़प़
	म़ऽ	ध़ध़	ऩि सा	ऩिऽ
	रे॒रे॒	गग	म॑म॑	गऽ
	गरे॒	ऽरे॒	साऽ	ऩिऽ
	रे॒रे॒	ग म॑	रे॒ऽ	गग

म'ध॒	पऽ	म'म'	गग
म'म'	गऽ	गरे॒	ऽरे॒
साऽ	ऩि रे॒	ऩी रे॒	ऩी रे॒
• गग	रे॒सा	ऩीसा	रे॒सा
ऩीऩी	ध़॒प़	म़प़	ध़॒प़
म़'ध़॒	ऩीरे॒	सासा	ऩीसा
नीरे॒	गम'	पम'	गम'
गम'	ध॒नी	सांनी	ध॒प
म'ध॒	नीरें	गरें	सांसां
नीरें	सांनी	ध॒प	म'प
म'ध॒	पम'	गरे॒	सासा
ऩीरे॒	गम'	पम'	गरे॒
साऽ	पम'	गरे॒	साऽ
पम'	गरे॒	साऽ	ऩीरे॒
गम'	पम'	गरे॒	साऽ
पम'	गरे॒	साऽ	पम'
गरे॒	साऽ	ऩीरे॒	गम'
पम'	गरे॒	साऽ	पम'

गरे̱ साऽ पमं गरे̱

स्वयं जांच अभ्यास 3

12.11 पूरिया धनाश्री राग के छोटे ख्याल को केवल एकताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

12.12 पूरिया धनाश्री राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

12.13 पूरिया धनाश्री राग के छोटे ख्याल में सम पर कौन सा 'शब्द' आता है?

क) केवल 'म' शब्द ही आता है

ख) केवल 'घ' शब्द ही आता है

ग) कोई भी शब्द आ सकता है

घ) सम पर कोई भी शब्द नहीं आता है

12.14 एक ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

12.15 एक ताल में, 12 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

12.6 सारांश

पूरिया धनाश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। पूरिया धनाश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

12.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

12.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ग)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: क)

12.7 उत्तर: ख)

स्वयं जांच अभ्यास 2

12.8 उत्तर: ख)

12.9 उत्तर: ख)

12.10 उत्तर: क)

स्वयं जांच अभ्यास 3

12.11 उत्तर: ख)

12.12 उत्तर: ग)

12.13 उत्तर: ग)

12.14 उत्तर: ख)

12.15 उत्तर: ग)

12.9 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

12.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

12.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग पूरिया धनाश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग पूरिया धनाश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया धनाश्री के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग पूरिया धनाश्री के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-13
ध्रुवपद

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	ध्रुवपद
13.3.1	ध्रुवपद का परिचय
13.3.2	राग देस का परिचय
13.3.3	राग देस का आलाप
13.3.4	राग देस में ध्रुवपद
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4	सारांश
13.5	शब्दावली
13.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7	संदर्भ
13.8	अनुशंसित पठन
13.9	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, ध्रुवपद का परिचय, आलाप, बंदिश, तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। ध्रुपद एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्रुवपद का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार ध्रुवपद को कई रागों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी ध्रुवपद के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बंदिश आदि को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से ध्रुवपद शैली को गा सकेंगे।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- ध्रुवपद के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- ध्रुवपद को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को ध्रुवपद गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी ध्रुवपद गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- ध्रुवपद के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

13.3 ध्रुवपद

13.3.1 ध्रुवपद का परिचय

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। 'ध्रुवपद' शब्द का अर्थ है 'ध्रुव+पद' अर्थात् जिसके नियम निश्चित हों, जो नियमों में बंधा हुआ हो। नाट्यशास्त्र के अनुसार 'अलंकार, वर्ण, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ परस्पर सम्बद्ध रहें, उन गीतों को 'ध्रुव' कहा गया है तथा जिन पदों में यह नियम शामिल हों, उन्हें 'ध्रुवपद' कहा जाता है। ध्रुपद एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। ध्रुवपद का विकास ध्रुवा गीतों से हुआ। ध्रुवपद का प्रचलन मध्यकाल से अधिक रहा। कुछ विद्वानों के अनुसार ध्रुवपद गायन शैली का आविष्कार राजा मानसिंह तोमर ने किया परंतु कुछ का कहना है कि यह गायन शैली पहले से ही मौजूद थी तथा राजा मानसिंह तोमर ने केवल इसके विकास में योगदान दिया।

ध्रुवपद के चार अंग होते हैं स्थाई, अंतरा, संचारी तथा आभोग। आजकल ध्रुवपद के दो ही अंग देखने को मिलते हैं स्थाई तथा अंतरा। प्राचीन काल में ध्रुवपद संस्कृत में गाए जाते थे परंतु भाषा परिवर्तन के साथ यह अन्य भाषाओं में भी गाए जाने लगे। ध्रुवपद शैली एक कठिन गायन शैली मानी जाती है। इस शैली में गमक, कठिन लयकारियों आदि का प्रयोग होता है। विशेष रुप से पखावज पर बजाई जाने वाली तालें जैसे तीव्रा ताल, चारताल, आड़ा चारताल आदि में ध्रुवपद गाये जाते हैं। ध्रु

वपद की बंदिशों में भगवान की स्तुति, राजाओं की प्रशंसा आदि पर आधारित रचनाएं मिलती हैं। ध्रुवपद गायन शैली अपने आप में परिपूर्ण है। इस शैली को स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा आदि संगीतकारों ने अपनी साधना से विकसित किया है। ध्रुपद गायन की चार बाणियाँ मानी गई हैं-

1 गोबरहार वाणी, 2 खंडार वाणी, 3 नौहार वाणी, 4 डागर वाणी। वाणी को वर्तमान में घराना कहा जा सकता है। वर्तमान में चार घरानों में डागर बाणी और गौबरहार वाणी प्रचलन में हैं।

13.3.2 देस राग का परिचय

राग - देस

थाट – देस

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र, (मं) अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी देस

आरोह: सा रे ग मं ध ऽ प, मं ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प ऽ, मं ग, रे ग, रे सा।

पकड़: ध नी सा, मं ग, रे ग रे सा।

देस राग, देस थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। देस राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र (मं) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया

जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की देस भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में मं ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

13.3.3 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा, रे रे ग रे सा, सा,
  ऩी सा, ध़ ध़ ऩी ऩी सा, सा, रे ग रे सा।
- सा ऩी ध़ ऩी ऩी सा, सा, ऩी सा, ऩी ध़ प़, प़, ध़
  ऩी ध़ म़ं प़ ध़, प़ म़ प़ ध़ ऩी सा।
- सा रे ग मं मं ग, रे ग मं ग रे ग रे रे
  सा, सा, ऩी ध़ ऩी सा। सा रे सा ऩी ध़ ऩी
  ध़ प़ म़ं प़ ध़ ऩी ग रे ग रे सा, सा,
  सा रे ग मं मं रे ग रे सा, ग रे ग मं
  ध प मं ध ध, मं रे ग रे सा।
- सा ऩी सा रे ग रे, ग मं ग रे, ध प मं ग रे
  ध नी ध प मं ग, ध़ ऩी सा रे सा।

13.3.4 राग देस में ध्रुपद ताल: चारताल

स्थाई

हर- हर शिव शंकर गंगाधर पिनाकि
पारवती अरधांगी सोहै।

अंतरा

नर रुंड माल कंठ और वेष विराजत,
भस्म अंग सेत बसन सेत मोहे ॥

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
x		0		2		0		3		4	
स्थाई-											
						ध	म'ग	रे	ग	रे	सा
						ह	sर	ह	र	शि	व
नि	सारे	ग	म'	प	-						
शं	ss	क	र	गं	s						
						म'	प	ध	म'	ग	ग
						गा	s	s	ध	र	पि
म'	ध	ध	नि	सा	नि						
ना	s	कि	पा	s	र						
						ध	प	म'	प	ध	म'
						व	थी	अ	र	s	धां
ग	रे	-	रे	-	सा						
s	गी	s	सो	s	हे						

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
x		0		2		0		3		4	
अंतरा											
						प	ग	-	म	-	ध
						न	र	s	यूं	s	ड
नि	सा	नि	सा	-	सा						
मा	s	ल	अं	s	ठ						
						सा	ध	-	नि	सा	रे
						औ	र	s	वे	s	ष
ग	रे	सा	नि	सा	निध						
वि	रा	s	ज	s	तs						
						म	ध	निसा	निध	नि	ध
						भ	s	स्म	अंs	s	ग
प	-	मध	नि	ध	प						
से	s	तs	ब	स	न						
						म	मग	रे	ग	रे	सा
						से	ss	त	सो	s	हे

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 ध्रुवपद किस प्रकृति क गायन शैली है?

क) गंभीर

ख) चंचल

ग) करूण

घ) उपरोक्त में से काई नहीं

13.2 ध्रुवपद के कितने अंग होते थे?

क) 2

ख) 4

ग) 6

घ) 3

13.3 प्राचीन काल में ध्रुवपद मुख्यत: किस भाषा में गाए जाते थे?

क) हिन्दी

ख) फारसी

ग) संस्कृत

घ) बृज भाषा

13.4 ध्रुवपद के साथ किस वाद्य की संगति होती है?

क) तबला

ख) मृदंग

ग) डुग्गी

घ) पखावज

13.5 ध्रुवपद में कठिन लयकारियों का प्रयोग किया जाता है?

क) हां

ख) नहीं

13.6 ध्रुवपद का विकास ------- गीतों से हुआ।

क) जाति

ख) ध्रुवा

ग) प्रबंध

घ) ख्याल

13.7 ध्रुवपद की कितनी वाणियां थी

क) 2

ख) 3

ग) 4

घ) 6

13.4 सारांश

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय तथा गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। ध्रुवपद का विकास ध्रुवा गीतों से हुआ। ध्रुवपद के चार अंग होते हैं स्थाई, अंतरा, संचारी तथा आभोग परन्तु आजकल ध्रुवपद के दो ही अंग देखने को मिलते हैं स्थाई तथा अंतरा। प्राचीन काल में ध्रुवपद संस्कृत में गाए जाते थे परंतु भाषा परिवर्तन के साथ यह अन्य भाषाओं में भी गाए जाने लगे। इस शैली में गमक, कठिन लयकारियों आदि का प्रयोग होता है। विशेष रुप से पखावज पर बजाई जाने वाली तालें जैसे तीव्रा ताल, चारताल, आड़ा चारताल आदि में ध्रुवपद गाये जाते हैं।

13.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: ख)

13.3 उत्तर: ग)

13.4 उत्तर: घ)

13.5 उत्तर: क)

13.6 उत्तर: ख)

13.7 उत्तर: ग)

13.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह भाग (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

13.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह भाग (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

13.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. ध्रुवपद का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. किसी भी राग में ध्रुवपद को लिखिए।

प्रश्न 3. किसी भी राग में ध्रुवपद को गाकर सुनाइए।

इकाई-14
एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	राग बागेश्री
14.3.1	बागेश्री राग का परिचय
14.3.2	बागेश्री राग का आलाप
14.3.3	एक ताल में बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
14.3.4	बागेश्री राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
14.4	सारांश
14.5	शब्दावली
14.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
14.7	संदर्भ
14.8	अनुशंसित पठन
14.9	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह पंद्रहवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को कई तालों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री में, एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा सकेंगे।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

14.3 राग बागेश्री

14.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग नि)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग म ध नि सां

अवरोह - सां नि ध, म प ध ग, म ग रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध ग, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-ऩी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा ऩी ध़ ऩी सा म या ध़ ऩी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

14.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, ऩी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा,

  सा ऩी ध़ म़ -, म़

  ध़ ऩी ऩी सा, सा,

- ध़ ऩी सा म ग – म ग रे सा
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा
- ध़ ऩी सा म -, ग म ग रे सा, ग

  म ग – ग म ध –

  म ग, म ग रे सा
- म ग ध, ध म – ध नी ध म,

  म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म प ध

  ग – म ग

  रे सा, ध़ ऩी ऩी सा

  म ग रे सा, सा

14.3.3 एकताल में बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: बागेश्री **ताल: एक ताल** **लय: द्रुत लय**

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई											
सा	गग	म	ग	-ग	रे	सा	ऩी	सा	ग	रें	ऩी
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
ध़	-ध़	म़	ध़	-ऩी	ऩी	सा	ऩी	ध़	ऩीऩी	गम	गरे
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर
अन्तरा											
म	गग	म	ध	-ध	ध	नी	-नी	नी	ध	-ध	नी
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
सां	-सां	सां	नी	-नी	सां	ध	नी	सांमं	गंमं	गं	रें
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा
सां	गंगं	मंमं	गं	-गं	रें	सां	नी	सां	नीनी	ध	नी
दा	दिर	दिर	दा	ऽर	दा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	-ध	ध	म	प	ध	ग	रें	-रे	रे	सा	धनी
दा	ऽर	दा	दा	रार	दा	रा	दा	-द	दा	रा	दिर

14.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

•	सांनी	धनी	सांनी	धनी	धम	गम	गरे	साऩी
	ध़ऩी	साध़	ऩीसा	ध़ऩी				
•	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	म-	सा-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	म-	सा-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	म-	सा-	--
•	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	सां-	सां-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	सां-	सां-	--
	गम	धनी	सांनी	धनी	सां-	सां-	सां-	--
•	ऩीसा	गम	धनी	धम	गम	धम	गरे	सासा
	ऩीसा	गम	गरे	सा-	ऩीसा	गम	गरे	सा-
	ऩीसा	गम	गरे	सा-				
•	सांनी	धनी	धम	पध	ग-	मग	रेसा	ऩीसा
	गम	गम	ध-	मग	रेसा	साग	मग	मध
	-म	गरे	सासा	- ग	मग	मध	-म	गरे
•	धऩी	सा,ध़	ऩीसा,	ध़ऩी,	गम	ध,ग	मध,	गम,
	धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,	धनी	सांनी	धम	गम

धम गम गरे सासा गम धनी सां- गम

धनी सां- गम धनी

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

14.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

14.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

14.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

14.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

14.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) पूरिया धनाश्री

घ) देस

14.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

14.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

14.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

14.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

14.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत को तीन ताल के अतिरिक्त अत्य तालों में भी बजाया जाता है। इसमें

14.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1 उत्तर: क)

14.2 उत्तर: ख)

14.3 उत्तर: ग)

14.4 उत्तर: घ)

14.5 उत्तर: क)

14.6 उत्तर: ख)

14.7 उत्तर: ग)

14.8 उत्तर: घ)

14.9 उत्तर: क)

14.10 उत्तर: ख)

14.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1999). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

14.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-15
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
15.3.1	तिलवाड़ा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
15.3.2	झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
15.3.3	धमार ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
15.3.4	रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
15.3.5	कहरवा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA306PR की यह पंद्रहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल का परिचय प्रदान करना।
- तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

15.3 तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल

15.3.1 तिलवाड़ा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	16
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

तिलवाड़ा ताल 16 मात्रा की ताल है। यह ताल 4 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 4 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पांचवी व तेहरवीं मात्रा पर ताली तथा नौवीं मात्रा खाली होती है। तिलवाड़ा ताल का प्रयोग मुख्य रूप से बड़े ख्याल के साथ होता है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में अधिक होता है। यह ताल अधिकतर विलंबित लय में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल इत्यादि गाए जाते हैं।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धा	तिरकिटधीं	धीं	धा	धा	तिं	तिं	
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
ता	तिरकिटधीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	
0				**3**			

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धातिरकिट	धींधीं	धाधा	तिंतिं	तातिरकिट	धींधीं	धाधा	धींधीं
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातिरकिट	धींधीं	धाधा	तिंतिं	तातिरकिट	धींधीं	धाधा	धींधीं
0				**3**			

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धातिरकिटधीं	धींधाधा	तिंतिंता	तिरकिटधींधीं	धाधाधीं	धींधातिरकिट	धींधींधा	धातिंतिं
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
तातिरकिटधीं	धींधाधा	धींधींधा	तिरकिटधींधीं	धाधातिं	तिंतातिरकिट	धींधींधा	धाधींधीं
0				**3**			

चौगुण

1	2	3	4
धातिरकिटधींधीं	धाधातिंतिं	तातिरकिटधींधीं	धाधाधींधीं
x			
5	6	7	8
धातिरकिटधींधीं	धाधातिंतिं	तातिरकिटधींधीं	धाधाधींधीं
2			
9	10	11	12
धातिरकिटधींधीं	धाधातिंतिं	तातिरकिटधींधीं	धाधाधींधीं
0			
13	14	15	16
धातिरकिटधींधीं	धाधातिंतिं	तातिरकिटधींधीं	धाधाधींधीं
3			

15.3.2 झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 10

विभाग 04

ताली 03

खाली 01

झपताल 10 मात्राओं की ताल है। इसमें 4 विभाग हैं। पहले व तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएं तथा दूसरे व चैथे विभाग में 3-3 मात्राएं हैं। पहली मात्रा पर सम, छटी मात्रा पर खाली, पहली, तीसरी तथा आठवीं मात्राओं पर ताली है। झपताल मुख्य रूप से तबले पर बजाई जाती है।

##ताललिपि

एकगुण

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

दुगुण

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना

तिगुण

x		2		
1	2	3	4	5
धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना

चारगुण

x		**2**		
1	2	3	4	5
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

15.3.3 धमार ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 14

विभाग 04

ताली 03

खाली 01

धमार ताल 14 मात्रा की ताल है। इसके चार विभाग हैं। पहले विभाग में 5 मात्राएँ, दूसरे विभाग में 2 मात्राएँ, तीसरे विभाग में 3 तथा चौथे विभाग में 4 मात्राएँ हाती हैं। पहली मात्रा पर सम, छठी तथा ग्यारहवीं मात्रा पर ताली व आठवीं मात्रा पर खाली होती है। धमार ताल का प्रयोग 'धमार' गायन शैली के साथ होता है। यह ताल पखावज या मृदंग पर बजाई जाती है। यह गम्भीर प्रकृति की ताल है। इस ताल की रचना पखावज के खुले बोलों के आधार पर हुई है।

##ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
x					2		0			3			

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ	कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ
x					2		0			3			

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक	धिटधि	टधाऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
गतिट	तिटता	ऽकधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक
0			3			

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिटधि	टधाऽग	तिटतिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तिटताऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
कधिटधि	टधाऽग	तिटतिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तिटताऽ
0			3			

15.3.4 रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 07

विभाग 03

ताली 02

खाली 01

एक ताल 07 मात्रा की ताल है। यह ताल 3 विभागों में विभक्त है। पहला विभाग 3 मात्राओं का तथा दूसरा व तसरा विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर खाली, चौथी व छटी मात्रा पर ताली होती है। विद्वान मौखिक रूप में प्रथम मात्रा पर खाली मानते हैं, किन्तु क्रिया में उसी पर सम मानते हैं। इस प्रकार ताल रूपक में पहली मात्रा पर सम अथवा खाली दोनों आते हैं। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में

छोटा ख्याल, मध्य लय की गतें, द्रुत गतें, इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। सुगम संगीत इत्यादि में इस ताल का प्रयोग अधिक किया जाता है।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
0			**2**		**3**	

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना
0			**2**		**3**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीना	धीनाधी	नातीती	नाधीना	धीनाती	तीनाधी	नाधीना
0			**2**		**3**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीनाधी	नाधीनाती	तीनाधीना	धीनातीती	नाधीनाधी	नातीतीना	धीनाधीना
0			**2**		**3**	

15.3.5 कहरवा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	08
विभाग	02
ताली	01
खाली	01

कहरवा ताल आधुनिक समय की एक बहुत लोकप्रिय ताल है। इसका प्रयोग फिल्मी गीत, भजन, ग़ज़ल, लोक संगीत आदि में अधिक होता है। यह प्रमुख रूप से तबले, ढोलक, नाल आदि पर बजाई जाती है। यह चंचल प्रकृति की ताल मानी गई है। इस ताल में 8 मात्राएं है तथा 2 विभाग हैं। प्रत्येक विभाग 4-4 मात्राओं का है। पहली मात्रा पर सम तथा पांचवी मात्रा पर खाली है।

काललिपि

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
एकगुण							
धा	गे	ना	ती	न	क	धिं	न
x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
दुगुण							
धागे	नाती	नक	धिंन	धागे	नाती	नक	धिंन

x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
तिगुण							
धागेना	तीनक	धिंनधा	गेनाती	नकधिं	नधागे	नातीन	कधिंन
x				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
चारगुण							
धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1. तिलवाड़ा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

15.2. तिलवाड़ा ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

15.3. तिलवाड़ा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

15.4. तिलवाड़ा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

15.5. झप ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

15.6. झप ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

15.7 झप ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 5

ग) 6

घ) 3

15.8. झप ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

15.9. धमार ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) ती

घ) ता

15.10 धमार ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) क

ग) ट

घ) ग

15.11. रूपक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 7

ग) 9

घ) 6

15.12. रूपक ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 3

ग) 1

घ) 8

15.13. रूपक ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 4

ग) 7

घ) 5

15.14. रूपक ताल में 7वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) ती

ख) धी

ग) ना

घ) ता

15.15. कहरवा में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 7

ग) 6

घ) 8

15.16. कहरवा में कितनी ताली होती हैं?

क) 4

ख) 3

ग) 2

घ) 1

15.17. कहरवा में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 7

घ) 3

15.18. कहरवा में कितने विभाग होते हैं?

क) 6

ख) 4

ग) 2

घ) 8

15.19. कहरवा में 8वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) न

ग) क

घ) गे

15.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तिलवाड़ा ताल, झप ताल, धमार ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल काफी प्रयोग की जाती हैं। तिलवाड़ा ताल 16, झप ताल 10, धमार ताल 14, रूपक ताल 7, कहरवा ताल8 मात्राओं की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

15.5 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 उत्तर: घ)

15.2 उत्तर: ग)

15.3 उत्तर: ग)

15.4 उत्तर: क)

15.5 उत्तर: क)

15.6 उत्तर: ग)

15.7 उत्तर: ग)

15.8 उत्तर: क)

15.9 उत्तर: ग)

15.10 उत्तर: ग)

15.11 उत्तर: ख)

15.12 उत्तर: ग)

15.13 उत्तर: क)

15.14 उत्तर: ग)

15.15 उत्तर: घ)

15.16 उत्तर: घ)

15.17 उत्तर: ख)

15.18 उत्तर: ग)

15.19 उत्तर: ख)

15.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. धमार का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. तिलवाड़ा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. झप ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. रूपक का परिचय लिखिए।

प्रश्न 5. कहरवा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 6. धमार को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 7. तिलवाड़ा ताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 8. झप ताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 9. रूपक को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 10. कहरवा को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 2. राग देस का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 3. राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग भीमपलासी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 5. राग देस का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 6. राग पूरिया धनाश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. झप का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 8. तिलवाड़ा ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 9. रूपक ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 10. धमार ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 11. कहरवा ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 12. किसी एक राग की द्रुत गत (तीनताल के अतिरिक्त) को तोड़ों लिखें तथा बजा कर सुनाएं।

प्रश्न 13. किसी एक राग में ध्रुवपद/धमार को लिखें तथा सुनाएं।